नोट - यह कापी दोबार पढ़कर शुद्ध करली गई है।
[illegible]
ता. १५-२-६८

CPM
SIDDIAMBR BAZAR

80
PAGES

EXERCISE BOOK

रक्तदान ६३ पृष्ठ से आगे अनुवाद के (कापी नं. २
महादाता या महादानी (पृष्ठ ६३-१२[illegible] तक)

CITY PAPER MART (Regd.)
SIDDIAMBER BAZAR HYDERABAD A. P.

..भरा हुआ है, ये शब्द निकल जाते तो भविष्य में होने वाली विपत्तियों से बच जाता और हमारा उपन्यास भी अधूरा रह जाता।)

(कुछ रुककर) मैं केवल इतना कह सकता हूं कि यदि मैं पादरी होता तो भगवान से अवश्य भिक्षा मांगता कि आज की कुर्बानी या बलिदान पर आप न पछतावें। और ग्रेशिया! भगवान तुम्हें इस बलिदान के बदले में कभी भी बुरा दिन न दिखावे और तुम सदा आनंदित व प्रसन्न रहो।

ग्रेशिया कुछ कहना चाहती थी परन्तु उस की वाणी रुक गयी और लार्ड रैमूर ने इस प्रकार बातचीत ~~प्रारंभ की~~ रखी।

रैमूर — मैं कुछ और भी कहना चाहता हूं और वह यह है कि आप मुझसे सर्वथा भय न रखावें क्योंकि मैं आपके समय में विघ्नकारी न हुआ करूंगा। यद्यपि कभी २ मिलने अवश्य आऊंगा। क्या तुम मुझको झोपड़ी में आने से और कभी २ मेरे साथ खाना खाने से इन्कार तो न करोगी।

ग्रेशिया — नहीं।

रैमूर — मैं आपका धन्यवाद किन शब्दों में अदा करूं। हां, यदि मैं रोगी हो गया और हालत शोचनीय हो गयी (ग्रेशिया की ओर देखकर जो सर्वथा पीली पड़ गयी थी) क्षमा करना, मेरे कहने का केवल इतना अभिप्राय था कि उस समय मैं आपको अवश्य बुलाऊंगा और निःसन्देह आप अवश्य अकेली ही आवेंगी। जिस को मैं केवल आपसे एकान्त में कहूंगा।

ग्रेशिया — (रुक २ कर कठिनता से उत्तर देते हुए) क्या इस समय कहने की बात नहीं है।

रैमूर — नहीं, इस समय नहीं। (कुर्सी [illegible] जिस पर ग्रेशिया बैठी हुई थी

कुछ हटकर फिर वापिस आकर) हां, याद आगया। यदि आपको किसी प्रकार की ऐसी आवश्यकता आपड़े जिस में मेरी सलाह की आवश्यकता हो तो मैं आशा करता हूं कि आप मुझको बुलाने में संकोच न करेंगी।

ग्रेशिया — बहुत अच्छा।

रैमूर — मैं यही कुछ कहना चाहता था (कुर्सी से हाथ हटाकर प्यार करना चाहा परन्तु फिर संभल गया)। आपके पिता के लिये यह अच्छा होगा कि वह जलवायु परिवर्तन के लिये कहीं बाहर चले जावें क्योंकि उनको जलवायु परिवर्तन की आवश्यकता है। और यदि वह और आप किसी सुन्दर और आनंद देनेवाले स्थान में जावें तो कैसा अच्छा है।

ग्रेशिया — मैं उनसे कह दूंगी। अब मैं जाती हूं वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

रैमूर — (रूखेपन से) हां, आपको जाना चाहिये . . . क्या हम . . . क्या आप मुझको - - - यहीं से अलविदा कहने की आज्ञा देंगी?

ग्रेशिया ने नीची दृष्टि से हाथ मिलाया। खिड़कियों से धूप उसके निर्मल चेहरे पर पड़ी जिससे रैमूर के दिल की धड़कन अधिक होने लगी। और कामदेव की चिनगारी सुलगने लगी। वह दिल में विचार करने लगा कि इसको मुझ से स्नेह नहीं है। इसने अपने पिता को बचाने के उद्देश्य से शादी की है। मैं कभी अपने दिल के हालात को प्रकट न करूंगा। (ग्रेशिया से) अच्छा विदा, ग्रेशिया अलविदा।

मि० टैम्पैस्ट गोल कमरे में ग्रेशिया की प्रतीक्षा में खड़ा हुआ था। उसने ग्रेशिया को आते देखकर उसका हाथ पकड़ लिया।

ग्रेशिया — मैं चलने के लिये तैयार हूं।

यह कहकर वह गाड़ी की ओर जो प्रतीक्षा में खड़ी हुई थी चल निकली और रैमूर ने हाथ का सहारा देकर उसको अन्दर बिठा दिया। मिस्टर हैम्पैस्ट भी ~~गाड़ी में~~ अलविदा कहकर गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी चल निकली। रैमूर के लिये यह बड़ा कठिन समय था। उस का दिल चाहता था कि ग्रेशिया को अपने महल में लेकर प्यार करे परन्तु कठिनता से रुका। और जब गाड़ी चली गयी तो रुक न सका और स्वयं कहने लगा — "ग्रेशिया, मैं तुमको जाने नहीं दे सकता। तुम मेरी पत्नी हो। तुम मुझको किस तरह छोड़ सकती हो। तुमको अवश्य मेरे साथ रहना चाहिये"।।

इति नवम परिच्छेद।

(छ.प.मू.ले)

(१०) दसवां परिच्छेद (१०)

रैमूर फिर पुस्तकालय में लौट आया। काम की अग्नि में वह जल रहा था। उस को ऐसा प्रतीत होता था कि ग्रेशिया उसी प्रकार पुस्तकालय में उपस्थित है। मैं उसकी वाणी सुन रहा हूं, उस के लावण्य की बिजली को देख रहा हूं। वह इन विचारों में देर तक ऐसा मग्न रहा कि एकदम अपने हाथ फैलाकर कल्पित ग्रेशिया को अपनी ओर खींच लिया और कहने लगा — "ग्रेशिया, मेरी प्यारी ग्रेशिया", परन्तु उत्तर न पाकर अपनी आवाज़ की गूंज से फिर चौंक पड़ा और अपने हाथों से अपने मुंह को ढक कर रोने लगा। (थोड़ी देर बाद आंखों से आंसू पोंछकर अपने आप) मैं कैसा मूर्ख हूं। क्या मुझको मालूम नहीं कि मैं ऐसा अभागा हूं जिसपर मौत का फतवा लग चुका है। और यदि मान भी

लिया जाये कि उस को मुझसे प्रेम होता तो वह शादी फिर भी न करती। इन विचारों के आते ही उस की कुछ सन्तुष्टि सी हो गई। फिर उसने अपने दिल से कहा कि मैंने भी दुनियां में आकर कुछ कर ही लिया। मैं ने उसको दरिद्रता से बचा लिया और भविष्य के लिये उस के जीवन को ऐश्वर्यशाली बना दिया है। यद्यपि रैमूर को कुछ संतोष हुआ पर वह खुशी क्षणिक थी। परन्तु बहुत आदमियों को यह भी नसीब नहीं होती। वह इसी उधेड़बुन में था कि नौकर ने आकर बड़े विनय से निवेदन किया कि सरकार! डाक्टर ब्राण्डन साहब पधारे हैं।

रैमूर — (अपने विचारों से एकाएक चौंककर) डाक्टर ब्राण्डन कौन (फिर स्वयं) अच्छा, मैं समझा, उन को आने दो।

नौकर चला गया और एक क्षण के पीछे एक छरहरे शरीर का नौजवान जिसकी आयु भी रैमूर से बड़ी न थी, अन्दर आया और हाथ मिलाने के बाद कहने लगा —

ब्राण्डन — रैमूर, तुम मुझे देखकर चकित तो अवश्य हुए होगे?

यद्यपि रैमूर ने ब्राण्डन का स्वागत पूरी गर्मजोशी और तपाक से किया किन्तु यदि वह अपने ही विचारों में लीन न होता और इन विपत्तियों से पृथक् होता तो शायद स्वागत इससे भी अधिक प्रेम और गर्मजोशी से होता। क्योंकि ब्राण्डन और रैमूर दोनों किसी समय में सहपाठी थे और दोनों का आपस में बड़ा स्नेह था।

रैमूर — (प्रेम और अकृत्रिम भाव से) अहा! मित्र तुम कहां से कूद पड़े। मैंने तो तुमको मुर्दा खयाल कर लिया था। कितना ही समय गुजरा किन्तु न तो तुम्हारी कुशलता का पता लगा न तुम्हारा। मिले कितना काल गुजर गया?

ब्राण्डन — मेरा विचार है दस साल गुजरे हैं। मैं इतना समय अपने

कामकाज में बुरी तरह फंसा रहा। और इतनी कठिनाइयां सही हैं कि ये दस साल गुजरते हुए मालूम ही नहीं हुए। अब मैं क्रिश्चियाना से आरहा हूं। चिरकाल से मैं यात्रा कर रहा हूं। हां, खूब याद आया, अनेक वर्षों बाद अब दिल ने कहा, चलो कुछ दिन जन्मभूमि की भी हवा खा आवें। मैं परसों चला जाऊंगा।

रैमूर — वाह, खूब कहा, अभी आये और अभी चले। इतनी जल्दी भला इतनी जल्दी मैं जाने ही न दूंगा। तुमको चिरकाल तक ठहरना पड़ेगा। पहले यह तो बतलाओ तुम्हारा सामान कहां है?

ब्राण्डन — मेरा सामान तो गोल कमरे में पड़ा है। तुम्हारा नौकर तो उस को ऊपर के कमरे में ले जाने लगा था मगर मैंने उस को रोक दिया।

रैमूर — क्यों, यह क्यों? अच्छा मैं उस को अब ऊपर भेजे देता हूं।

ब्राण्डन — (रैमूर को दरवाजे की ओर जाता देखकर और हाथ से पकड़कर) ठहरो भी! क्या मैं कुसमय में नहीं आया हूं? मैंने नौकर की ज़बानी सुना कि तुम्हारी आज ही थोड़ा काल बीता है कि शादी हुई है। मैंने दिल में ख्याल किया कि बिना मिले जाना तो ठीक नहीं है। चलो तुमको बधाई तो दे लूं। अच्छा लो मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। मुझको आज्ञा दो।

रैमूर — (जिसके दिलपर शादी की बधाई की चोट लगी थी) नहीं, मैं नहीं जाने दूंगा। यह तो ठीक है कि मेरी शादी अभी हुई है परन्तु तुम को भागने की कौन सी आवश्यकता पड़ गई। मैं तुम से सारा हाल बयान करूंगा परन्तु तुम को तो ठहरना पड़ेगा। यह कहकर रैमूर ने दरवाजे पर जाकर द्वारपाल को हुक्म दिया कि वह ब्राण्डन का असबाब ऊपर के कमरों में सुन्दर ढंग से लगा दे और शीघ्र आजाय।

रैमूर — अच्छा, अब मुझे अपने हालात सुनाओ कि कैसे रहे और क्या करते रहे?

ब्राण्डन — मित्र, फिर मैं यही कहूंगा कि मुझको जाने दो। देखो मैं तुम्हारे सुखों में विघ्नकारी होना नहीं चाहता।

रैमूर — (गर्दन हिलाकर) चुप करके बैठ जाओ नहीं तो कुछ सुनकर खुश होगे। मैं अभी अपना सारा हाल बतला दूंगा। यार तुम तो खूब मोटे ताजे स्वस्थ मालूम होते हो।

ब्राण्डन — (आश्चर्य से रैमूर को देखकर) यार, तुम मेरे मुंह से छीन करले गये। मैं भी तुम्हारे बारे में यही शब्द कहने वाला था।

रैमूर — मेरे लिये! मेरा स्वास्थ्य तो खराब हो चुका है। अच्छा इस क़िस्से को फिर सुनना। हां, खूब याद आया, तुमने खूब यात्राएं कर रहे हो और अब डाक्टर ब्राण्डन कहाते हो। मैं तुमको बधाई देता हूं। यार मेरा खयाल है कि समय तुम्हारे अनुकूल रहा है।

ब्राण्डन — हां, मेरी आशाओं से बढ़कर। मेरा सौभाग्य भी सहायता करता रहा है। शायद तुमने न सुना हो मेरी ख्याति भी खूब हो गई है, तुमको आश्चर्य तो अवश्य प्रतीत होगा।

रैमूर — (गर्मजोशी से) मुझको बिल्कुल आश्चर्य मालूम नहीं होता। तुमको याद नहीं जब कालेज में मैं तुमसे कहा करता था कि ब्राण्डन तुम किसी दिन को बड़े आदमी बन जाओगे और बड़ा नाम पैदा करोगे। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' मेरी रायमें तुम्हारी स्वास्थ्य प्रथम से ही ऐसा था।

ब्राण्डन — यार, मेरा यही अनुमान है कि मैंने कुछ नाम पैदा कर लिया है (कुछ नम्रता से) मैंने अपने पेशे में [illegible] प्रकार में

(मूल ४५ तक)

(६८)

अभ्यास प्राप्त कर लिया है और मैंने अखबारों में भी डाक्टरों की राय अपने बारे में देखी है। वे मेरे पक्ष्यों पर कहे। इसके अतिरिक्त मेरे सौभाग्य से बड़े २ आदमी मेरे रोगी थे जैसे ड्यूक और प्रशासक ग्रेट और कुछ एक ऐसी ही मोटी मुर्गियां। इसके अतिरिक्त मैं कुछ डाक्टरी कालेजों में लेक्चर आदि भी अपने विषय पर देता रहा हूं। सच तो यह है कि जहां गया, चुपड़ी और दो दो ही मिलती रही हैं। अच्छा अब तुम बताओ कि तुम क्या करते हो?

रैमूर — कुछ भी नहीं।

ब्राण्डन — (कुर्सी से उठकर खिड़की के पास खड़े होकर और बाहर को झांकते हुए) यार, यह मकान वा दृश्य आदि तो बहुत प्यारे हैं। क्या यह तुम्हारे पिता ने बनाया था?

रैमूर — हां, पिता जी ने बनाया था।

ब्राण्डन — हां, तुम ने क्या कहा था कि कुछ भी नहीं करते रहे। भई, तुम अमीर लोग यही कहा करते हो। सुनाओ व्यायाम, किश्ती चलाने, घुड़दौड़ आदि खेलों का अब भी शौक रखते हो या बस? मुझ को याद आता है तुम इन सब में बड़े ही अभ्यस्त थे।

रैमूर — (ब्राण्डन के लिये सोडा ह्विस्की मिलाते हुए) चिरकाल से मैंने इन सब को त्याग दिया है।

ब्राण्डन — नौकर तुम्हारे लिये गिलास नहीं लाया।

रैमूर — मैंने शराब त्याग दी है।

ब्राण्डन — यह क्यों, याद रखो, शराब थोड़ी मात्रा में तो अमृत है परन्तु इसकी अधिक मात्रा [illegible] है। [illegible], यार मैं भूल ही

गया। आज तो तुम्हारी शादी का दिन है। मुझ से बड़ा अपराध हुआ है। लेडी रैमूर मुझे कदापि क्षमा न करेंगी। मुझको ठहरना उचित नहीं है। (गिलास को बिना पिये मेज़ पर रख कर) तुम मेरे पास क्या कर रहे हो? बराती कहां हैं? लेडी साहिबा किस जगह हैं?

रैमूर—(धीरे से) लेडी रैमूर अपने पिता के घर चली गयी हैं।

ब्राण्डन—(आश्चर्य से) लेडी रैमूर अपने घर चली गई। प्यारे रैमूर, तुम कहीं पागल तो नहीं हो, यह क्यों ऐसा हुआ?

रैमूर—(गंभीरता से) मैं अभी तुमको सारा वर्णन सुना देता हूं। मैं जानता हूं कि तुम चकित हो रहे हो क्योंकि शादी के दिन दूल्हा दुलहिन से बिना किसी विशेष बात के अलग नहीं होता।

ब्राण्डन—प्रभो, दया करियो। क्या कहें शादी के पीछे भी तुम्हारी तकरार तो दुलहिन से नहीं हो गई?

रैमूर—(मुस्किरा कर) नहीं, हमारी कोई तकरार नहीं हुई। तुमने मुझसे अभी थोड़ी देर हुई प्रश्न किया था कि मुझको खेल का शौक है या नहीं। मैंने कहा था कि नहीं। क्योंकि मुझको उसे छोड़ना पड़ा। प्यारे ब्राण्डन! मेरा दिल फैल गया है।

ब्राण्डन यह सुनकर चौकन्ना होकर खड़ा हुआ और फिर शोकातुर होकर कुर्सी पर बैठ गया।

ब्राण्डन—हाय, मेरे प्यारे रैमूर, यह क्या सुनाया।

रैमूर—ब्राण्डन, मैं तुम्हारी सहानुभूति का कृतज्ञ हूं। और मैं जानता हूं कि तुमको यह सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ है। मैं उस स्नेह को जो मेरे

साथ है, खूब जानता हूं। परन्तु मैं मजबूर हूं और यही कारण है कि सारे झगड़ों से अलग होकर मैंने एकान्तवास स्वीकार कर लिया है। और सच पूछो तो कब्र में रखे जाने से पहले ही जीवन्मुक्त हूं।

ब्राउडन — (रैमूर की ओर करुणापूर्ण दृष्टि से देख कर) प्यारे दोस्त! मैं यह सुनकर अत्यन्त दुःखी हुआ हूं और मुझको आश्चर्य भी होता है। किन्तु तुमने क्यों .... क्यों..

रैमूर — (बात काटते हुए) यही न, कि क्यों शादी की। मेरी शादी ~~एक~~ समझौते की शादी है। लेडी रैमूर का पिता मुसीबत में घिरा हुआ था और मैं उसकी सहायता नहीं कर सकता था। कारण यह था कि मैं अपने स्वर्गवासी पूज्य पिताजी की वसीयत के अनुसार शादी के किये बिना अपनी संपत्ति को खर्च करने का अधिकारी नहीं था। दूसरा यह कि मैं अपनी सम्पत्ति को एक बदमाश और लुच्चे से जो मेरे पीछे अधिकारी होता, बचाना भी चाहता था। अब समझे कि नहीं। आज प्रातःकाल ही हमारी शादी होगई। और लेडी रैमूर अपने पिता के साथ अपने मायके घर में चली गई। अब मैं अपनी जायदाद के खर्च करने का कानून से अधिकारी बन गया हूं।

ब्राउडन ~~प्रसन्न~~ (कुर्सी से खड़ा होकर कमरे में टहलने लगा। और विचित्र द्विविधा में पड़ गया था।)

ब्राउडन — मैंने ऐसी शादी कभी देखी क्या सुनी भी नहीं। अब मैं समझा। परन्तु भगवान जाने, तुम्हारे बारे में मेरे भीतर क्या विचार उठ रहे हैं।

रैमूर — प्यारे ब्राउडन, मैं जानता हूं कि तुम मुझसे सहानुभूति रखते

हो। मैं तुम्हें किस प्रकार धन्यवाद दूं।

ब्राण्डन — और सब से अधिक आश्चर्य यह है कि तुम इस रोग के रोगी प्रतीत नहीं होते।

रैमूर — (गंभीरता से मुस्कराते हुए) हाय शोक, रोना तो यही है कि यह बिल्कुल ठीक है। नीरो फील्ड की निदान है। वह मेरे जीवन से निराश है और मैं भी दीनता पूर्वक ~~की~~ उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

ब्राण्डन — (बात को निबटा कर) सुनाओ यार। लेडी रैमूर की सूरत कैसी है?

रैमूर — वह परम सुन्दरी और नवयुवती है।

ब्रा० — वह क्या कहती होगी।

रै० — उसने अपने पिता को बचाने के लिये अभिप्राय से यह बात स्वीकार कर ली।

ब्रा० — तो क्या लेडी साहिबा को तुम्हारा सर्वथा ध्यान नहीं। तुम से कुछ प्रेम नहीं।

रैमूर — (भूमि की ओर देखकर) नहीं, और सच पूछो तो प्रेम हो भी कैसे सकता है। अभी कुछ दिन नहीं बीते कि मेरी लेडी रैमूर से परिचय हुआ। मैं तुम से पहले ही कह चुका हूं कि यह एक समझौते का विवाह है।

ब्रा० — यह एक सर्वथा जंगली कहानी है जो मैंने सुनी है।

रैमूर — (कुछ देर रुक कर) प्यारे ब्रायन। डर तो तुम को है क्योंकि

मैं उस की ज्योति पर पतंगा हूं, मुझ को उस से प्रेम है।

ब्रा० — (~~जिसको~~ जो यह सुनकर विमूढ़ या स्तब्ध सा हो गया था) क्या तुम को लेडी रैमूर से प्रेम है?

रै० — मेरा रोम २ उसके प्रेम में जल रहा है। मैं कहता हूं कि मेरा दावा है कि किसी पुरुष को इतना प्यार स्त्री से न होगा जितना मुझको है और हाय अंधेर, मुझ को स्वयं ही अपने से अपना प्रेम पात्र अलग करना पड़ा। पास रहते हुए भी मैं दूर हूं। मेरी शेष आयु का एक २ क्षण मुझको बुरा मालूम हो रहा है। जीवन भारभूत है। सोचो तो सही, मेरी स्त्री हो, मुझको अपनी प्यारी से प्रेम हो और वह पृथक् रहे।

ब्राण्डन ने देखा कि रैमूर की आंखों से अंगारे निकल रहे हैं। पागलों की सी दशा है। वह उसे कन्धे से पकड़कर समझाने लगा।

ब्रा० — मेरे प्यारे भाई, प्यारे रैमूर! मैं तुमसे विनय पूर्वक कहता हूं कि तुम सन्तोष करो। तुम जैसे रोगी के लिये जोश या उत्तेजना अत्यन्त हानिकारक है।

रै० — मैं जानता हूं, मैंने बहुत संतोष किया है। उसको (लेडी रैमूर को) क्या पता है (हे ईश्वर! मैंने कितना संयम किया। जब मेरी देह उसके हाथ से छू जाती थी तो मेरा मन कितना चाहता था कि मैं उसको आलिंगन करूं) ब्राण्डन! यदि तुम मेरे सच्चे मित्र हो तो मुझ को कुछ ऐसी औषधि दो जिससे मैं इस दुःख से छूट जाऊं।

ब्रा० — तुम लेट जाओ, और अधिक बकवास मत करो (एक

४० ख मूल

गिलास में थोड़ा सोडा और कुछ ह्निस्की मिलाकर) लो यह पीलो। इससे नुकसान न होगा।

रैमूर ने शराब को ब्राण्डन से लेकर पी लिया और फिर कुर्सी पर सिर झुकाकर बैठ गया। ब्राण्डन रैमूर की ओर करुणा और प्रेमभरी दृष्टि से देखता रहा।

ब्रा० — यार, जरा अपना कोट तो उतार डालो (रैमूर ने कोट उतार दिया) और जरा वास्कट भी उतार दो।

रै० — तुम क्या करना चाहते हो।

ब्रा० — जरा तुम्हारे हृदय की परीक्षा करना चाहता हूं। शायद मैं कोई औषधि ऐसी दे सकूं जो कुछ लाभदायक हो। यह कहकर ब्राण्डन ने परीक्षा करने का यंत्र अपनी जेब से निकाला और ~~दिल~~ हृदय के स्थान पर लगाकर दोनों सिरों को अपने कानों में लगाया और झुककर सुनने लगा। ज्यों २ ब्राण्डन परीक्षा करता जाता था त्यों २ उसके चहरे से आश्चर्य प्रतीत होता जाता था।

रै० — (परीक्षा होते २ ही) ब्राण्डन, यह एक भयंकर रोग है। देखो सच मत छिपाना क्योंकि ~~असलीयत~~ वास्तविकता तो मुझको पहले ही मालूम है। और सब से अच्छी खबर जो तुम मुझको दे सको यही है कि बस अब मैं प्रातःकाल के टिमटिमाते दीपक के सदृश एक दो दिन का ~~मेह~~ अतिथि हूं।

ब्रा० — सच पूछना चाहते हो। प्यारे रैमूर यह बताओ कि तुम में वास्तविक बात सुनने की शक्ति है या नहीं?

रै० — (कष्ट से) अर्थात ~~सुनने की~~ शक्ति। लो और सुनो। जो मैंने अपनी पत्नी

~~के~~ वियोग नहीं सहा। क्या तुम विचार कर सकते हो कि किसीप्रकार की मृत्यु या उसकी घोषणा जोतुम डाक्टर लोग लगा दिया करते हो उस वियोग से अधिक है?

ब्रा०— मैंने जो कुछ कहा है सच कहा है।

रै०— मैं तुम्हारा अभिप्राय नहीं समझा। तुम क्या कहना चाहते हो?

ब्रा०— रैमूर! क्या तुम मेरे निदान को सुनने की शक्ति रखते हो, तो अपने आपे से बाहर तो न जाओगे। अच्छा तो अपनी सारी सामर्थ्य और साहस को इकट्ठा कर लो। मैं तुम से एक ऐसी बात कहनेवाला हूँ जो कि तुम्हारी सारी जीवनयात्रा को ही बदल देगी।

रै०— (घृणा से हंसकर) मेरी जीवनयात्रा को बस यही कहोगे न कि मेरा जीवन एक दो दिन या कुछ ही घण्टों का है। प्यारे मित्र! यही तो मैं सुनना चाहता हूं।

ब्रा०— प्यारे मित्र! तो लो सुनलो। तुम को कोई बीमारी ही नहीं है। तुम्हारा हृदय ऐसी ही अच्छी दशा में है जैसा कि स्वस्थ पुरुष का। तुम सौ साल तक जी सकते हो। धैर्य धरो, बको मत। सुनलो प्यारे रैमूर। मैं परमात्मा को हर्त्ता कर्त्ता तथा साक्षी जान कर सच कहता हूं कि तुम को इससमय कोई बीमारी नहीं है॥

इति द्वितीय दृश्य.

ग्यारहवां परिच्छेद

यह सुनकर लार्ड रैमूर पागलों की तरह एकदम खड़ा होगया।

रैमूर — तुम क्या कह रहे हो?

ब्राण्डन — होश करो। मैंने यह कहा है कि तुम को कोई बीमारी नहीं है। और मैं अपने शब्द दोहराने केलिये तैयार हूं कि इस समय तुमको कोई भी बीमारी नहीं है।

रैमूर — ब्राण्डन! क्या तुम दृढ़ निश्चय से कहते हो। मेरे शरीर की परीक्षा डा० नीरोफील्ड ने बहुत ध्यान और सावधानता से की थी और उसने बड़ी दृढ़ता और निश्चय से कहा था कि रोग असाध्य है।

ब्रा० — मेरी ओर देखो। दिल की बीमारियों के निदान और चिकित्सा में मुझ को बहुत प्रसिद्धि प्राप्त है। मैं नीरोफील्ड जैसे योग्य पुरुष के विरुद्ध कुछ कहना नहीं चाहता। वह मुझसे कहीं अधिक विद्वान और अनुभवी है। परन्तु वह क्या, प्रत्येक मनुष्य से भूल हो जाती है। सुनो मनुष्य के शरीर की बनावट में उस कारीगर ने भेद रखा है जिस को आजतक किसी ने भी नहीं पाया या यों कहो कि उस के काम हमारी समझ से बाहर हैं। मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि जिस समय तुमने नीरोफील्ड से अपनी परीक्षा करायी थी उस समय तुम्हारा दिल फैला हुआ न था। परन्तु मैं इस समय की बात करता हूं, इस समय बिल्कुल नहीं है। और मैं यह परिणाम निकालता हूं कि तुम जो इन कुछ वर्षों में सर्वथा आराम से रहे, इस से तुम्हारा दिल स्वाभाविक रूप से अपनी

अपनी असली अवस्था पर आगया है। (रैमूर को ठंडे सांस भरते देखकर) कि और तुमने इसी नुस्खे या उपाय से अच्छा हो जाना था। कारण यह कि तुम बलिष्ठ थे और अब भी भगवान की कृपा से हो। तुम नशीली वस्तुओं के सेवन से बचे रहे हो। कुछ वर्षों से निश्चय ही जबसे तुम को अपनी बीमारी का पता लगा है अपनी सामर्थ्य को अधिक बढ़ाते रहे हो। मैं यह भी जानता हूं कि ऐसी भीषण बीमारी से नीरोग होना मानों मृत्यु के मुंह से लौट कर आना है किन्तु प्यारे रैमूर तुम इस कहावत के जीवित उदाहरण हो।

रैमूर — (उच्चस्वर से) यार! मैं किस प्रकार विश्वास कर लूं।

ब्रा० — सुनो, कल का छोकरा भी जिसने हमारे पेशे की चार पुस्तकें भी पढ़ी हों तुम को बता देगा कि दिल की गति ठीक है या नहीं। यद्यपि वह दिल की अनियमित गति से बीमारी पहचान न सके। उस को भी जाने दो। मैं दावे से कहता हूं कि अब नीरोफील्ड के पास जाओ और वह तुम्हारे अच्छा हो जाने से बहुत प्रसन्न होगा। लो मैं तुम्हारे साथ नहीं जाता। शायद वह सोचे कि मैं ने उसे सिखा दिया हो। वह तुमको बतला देगा कि तुम सर्वथा नीरोग हो और यह कि तुम एक सौ या नब्बे साल तक जियोगे। लो आओ अब मेरे साथ कुछ पान तो करो। मैं जानता हूं तुम्हारे दिल में इस समय क्या गुज़र रहा है।

रैमूर यह सुनकर खड़ा हो गया और द्विविधा में पड़कर कमरे में टहलने लगा।

ब्राण्डन — (प्याला सामने करके) यार! इतना क्यों परेशान हो रहे हो?

रैमूर — (प्याला लेकर और ... से अति प्रेम से आलिंगन करके, फिर

निराश हो कर) हे भगवान! यार सोचो तो सही। ग्रेशिया भी सोचेगी कि मैंने धोखा देकर उससे शादी की है। और श्वसुर साहब को तो अवश्य खयाल होगा कि मैंने ग्रेशिया को बहका लिया है।

ब्रा० — तुम तो वहमी हो। लो इस बात को तो मैं सिद्ध कर दूंगा कि तुमने कोई धोखा नहीं दिया।

रै० — बस, तुम यही कह दोगे न कि शादी के बाद मेरी दशा का पता चला। परन्तु यह बात तो मेरे कुछ काम की सिद्ध न होगी। मेरी शादी तो इन शर्तों पर हुई है कि मैं अपनी पत्नी को स्वतंत्र रहने दूं। और दावेदार न बनूं। उसको तो यही मालूम था कि यह संबंध कुछ दिन का है। और मेरी मृत्यु के पश्चात वह स्वतंत्र हो जायेगी।

रै. — ब्रांडन! तुमने मेरे प्रेमपात्र को देखा ही नहीं, नहीं तो तुम ऐसा कभी न कहते। मेरा शरीर एक सारंगी की तरह है जिसकी रगें उसकी तारों की तरह हैं। इन तारों से ग्रेशिया ग्रेशिया का (स्वर) मैं सुन रहा हूं,

( )(अपने आप ही) बकन सूख लकड़ी भयो और रगें भई सब तार राम राम धुन रोम में बाजत नाम तिहार।। (ब्रांडन से) मैं उसकी एक क्षण की प्रसन्नता के लिये मरने को उद्यत हूं। ब्रांडन क्या तुम्हारा अभिप्राय है कि, अब मैं उसके पास जाऊं और कहूं कि सौभाग्य से मैंने तुमको खरीद कर लिया है। अब तुम मेरी धन-क्रीता दासी हो या यों कहो कि तुम मेरा शरीर और प्राण हो। अब मैं तुमको लेने आया हूँ। ध्यान करो क्या मैं ऐसा कह सकता हूं।

(८६ स मूल पुस्तक लेख)

(८६)

ब्राण्डन—(अट्टहास्य करके) तुम भी बड़े जादूगर ही निकले। मेरा विचार है कि वह तुम्हें स्वस्थ देखकर अपने में फूली न समाये-गी तो क्यों इतनी जुदाई सहन कर रहे हो। क्या तुम बूढे हो, कुरूप हो, असुन्दर हो, रोगी हो या कंगाल मोहताज हो? तुम में कौनसी बात है जो स्त्रियें पुरुषों में होना नापसन्द करती हों।

रैमूर— अरे म्यां, तुम क्या जानो, अभी कल के बच्चे हो। मेरी मुलाक़ात लेडी रैमूर के साथ अभी हाल में तो हुई है। न उसको मुझसे स्नेह है न प्रेमानुराग। वह सर्वथा अल्पवयस्क और भोली है। केवल अपने पिता को बचाने के उद्देश्य से वह इस विवाह पर तैयार हुई है। यदि मैं वैसे विवाह के लिये कहता तो कभी स्वीकार न करती और नांही उसका पिता आज्ञा देता। तुम भी कहते हो न कि अपने स्वस्थ होने के कारण मैं वचन तोड़कर उसका दावेदार बनूं, तो भई मुझसे तो ऐसा नहीं हो सकता। मेरे लिये तो यह बात असंभव है। कौन पुरुष वचन तोड़कर लज्जित होना पसंद करेगा।

ब्राण्डन —— तुमने मुझसे अभी कहा था कि तुमको लेडी रैमूर से अनुराग है।

रैमूर — क्योंकि मैं कामातुर हूं इसीकारण से तो मैं ऐसा नहीं कर सकता। हां यदि मुझको प्रेम होता... हां तो फिर भी ऐसा न करता।

(८८)

(८९क)

ब्राह्मण — मुझको तुम्हारे प्रेम में भी संदेह है।

तैमूर — (प्रसन्नता से) शक मत रखो ना, मुझको वह दिलोजान से भी प्यारी है। शोक है ब्राह्मण! तुम मेरे प्रेम का अनुमान भी नहीं कर सकते।

ब्राह्मण — अनुमान क्या खाक करूं। भई मेरे दिल में तो कभी इस कामदेव ने डेरा डाला ही नहीं। और यदि मैं किसी पर कभी मोहित हुआ भी तो तुम्हारी जैसी बेवकूफ़ी तो मुझसे सर्वथा न की जायगी।

तैमूर — ब्राह्मण, तुमने मेरे प्रेमपात्र को देखा ही नहीं, नहीं तो तुम ऐसा कभी न कहते। मेरा शरीर एक सारंगी के समान है, जिसकी रगें उस की तारों के समान हैं। इन तारों से प्रेशिया प्रेशिया का स्वर मैं सुन रहा हूं। (मग्न होकर) — "बदन सूख लकड़ी भयो, औ रगें भई सब तार।
राम राम धुन रोम में, बाजत नाम तिहार॥"

(ब्राह्मण से) मैं उसकी एक क्षण की प्रसन्नता के लिये मरने को उद्यत हूं। ब्राह्मण, क्या तुम्हारा यह अभिप्राय है कि अब मैं उसके पास जाऊं और कहूं कि सौभाग्य से मैंने तुमको खरीद लिया है अब तुम मेरी धनक्रीता दासी हो या यों कह दो कि तुम मेरा शरीर और प्राण हो। अब मैं तुम को लेने आया हूं। ध्यान तो करो क्या मैं ऐसा कह सकता हूं?

(वर्ग ब) 21

श्रा० —— वह तुम्हारे [illegible] । प्रेमाकर्षी होने से बहुत खुश होगी ।।

रै० — मैं तुमको सौ बार कह चुका हूँ कि उसको मेरी जरा भी परवाह नहीं है कोई प्रेम का शब्द भी मध्य में नहीं आया । शादी तो एक ( ) समझौता है ।

श्रा० (विचार करके) — अच्छी बात, मेरे प्रश्नों का उत्तर दो, यह तो स्पष्ट है कि वचन पर स्थिर रहना बहुत कठिन है क्योंकि तुम जीवित हो । मरने वालों की सूची से हटा दिये गये हो । और केवल आत्मघात के सिवाय तुम और कुछ कर भी नहीं सकते क्योंकि युवती नारी कब तक अपने विचारों को वश में रख सकती है । और मेरा ख्याल है कि तुम पागल या निरिन्द्रिय (नपुंसक) तो नहीं जो आत्महत्या करो । बताओ फिर तुम क्या करना चाहते हो ।

रै० — भगवान जाने । मेरी इच्छा है कि मैं कहीं भाग जाऊं । और केवल यही एक मार्ग मेरे लिये खुला है । जब मुझको सारा हाल मालूम है तो मैं किस तरह से उससे मुलाकात करूं । यह सहारना मेरे लिये असंभव हो गया है । हाय क्या मैं उसके पास चला जाऊं और सारा हाल अपने प्रेम का सच सच कह दूं ।

श्रा० — भई, मैं तो कहूंगा कि यह सबसे अच्छी रीति है ।

रै० — (गर्दन हिलाकर) तुमको क्या खबर है जिस तन लागे, सो ही जाने । मैं अपने कल्पना और ख्याल में उसको देख रहा हूं । हाय ! क्या भयानक सूरत मालूम होती है । वह देखो वह मुझसे डरकर परे सरक रही है । हाय ! मुझको [illegible] और [illegible] कहकर लानत मला

मत कर रही है। (एकाएक चौकन्ना होकर) ब्रांडन! मेरे लिये केवल एक मार्ग है उत्तम है कि मैं इस स्थान से संबंध छोड़ जाऊँ। क्या तुम मुझको अपने साथ जहाँ जाओ लिये फिरोगे। क्या मैं सबसे पुराने और सबसे प्यारे दोस्त ब्रांडन पर भार — — तो न हूँगा।

ब्रां० — हर्गिज़ नहीं, मेरा शरीर और प्राण तुम्हारे लिये उद्यत हैं। हाँ बेशक एक बात अवश्य होगी कि सर्वदा तुमको तुम्हारे इस गधेपन के विरुद्ध शिक्षाएँ दे देकर दिक किया करूँगा।

रै० — मैं गधा ही सही, परंतु सचाई पसंद हूँ। ब्रांडन यदि तुम उचित समझो तो कल चले चलें।

ब्रां० — स्वीकार हूँ आ हाहा!! रैमूर! मुझको एक नई युक्ति सूझी है कि साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। तुम अपनी पत्नी को उसके हर फैसले पर छोड़ दो।

रै० — फैसला! वह किस तरह!

ब्रां० — मेरी तरफ देखो। लेडी रैमूर को एक चिट्ठी लिखी जाये जिसमें सारा हाल ठीक २ तुम्हारी नीरोगता का लिख दिया जावे। मैं तुमको एक सर्टीफिकेट भी दे दूँगा।

रै० — (अट्टहास करके, ताने की तौरपर), उसमें यह लिख दूँ कि मुझको तुम्हारे साथ प्रथम दिन से ही स्नेह है और मेरे भाग्य का निर्णय तुम्हारे हाथ है और फिर देखूँ कि वह आती है या नहीं?

ब्रां० — परिहास को गोली मारो। तुम्हारा कहना है कि उसको मुझसे प्रेम नहीं है। तुम कुछ ही दिन में कैसे प्रेमी बन गये। स्त्रियां अपना प्रेम अपने मुँह से बयान नहीं किया करतीं। लेकिन पुरुषों की अपेक्षा

(~~२~~ १८१)

क्षा प्रेमिणी शीघ्र बन जाती है।

रै० — मुझमें ऐसा लिखने का साहस भी हो!

क्रां० — इसमें साहस ~~और~~ कायरता का सवाल क्या है? यदि

रै० — (ज़ोर से), विचित्र कुछ मग़ज़ हो। देखो तो, ~~खत~~ से उसको स्नेह प्रेम न हो लेकिन वह मेरे पास आना (————) पत्नी होने के नाते अपना कर्तव्य समझे।

क्रां० — तो क्या वह इस कर्तव्य से ~~अ~~ स्वतंत्र है।

रै० — नहीं, सर्वथा नहीं, मेरी उसकी प्रतिज्ञा ~~वचन~~ यह है कि वह केवल नाममात्र को मेरी पत्नी कहायेगी। मुझ को उस पर कोई अधिकार नहीं है।

क्रां० — पड़े पत्थर तुम्हारी अक़्ल पर समझे तो क्या समझे। विचित्र मूर्ख से पाला पड़ा है। मैं कब कहता हूँ कि तुम अपना अधिकार जतलाओ। केवल अपने स्वस्थ होने का हाल कह दो और आग ~~फ़ैसला~~ करना उसका काम है। और लिख दो कि तुम अप्रसन्न नहीं हो और किसी प्रकार का दबाव मत डालो!

रै० — (बेतहाशा) — अच्छा मैं विचारूँगा।

क्रां० — तुम अपने विचार को भाड़ में डालो। बैठ जाओ और जिस तरह से कहा कह ~~/~~ डालो, याद रखो मेरी जान को तुम और लेडी रैमूर आयु भर यही आशीर्वाद दिया करोगे। यह कहकर क्रांउन कमरे से बाहर चला गया॥ रैमूर कुछ देर तो सोचता रहा और फिर एक काग़ज़ का टुकड़ा दराज़ में से निकालकर पत्र लिखने लगा। पहले चार पन्नों पर पत्र लिखा गया फिर फाड़ डाला गया, फिर लिखा फिर फाड़ा। अंत में रैमूर ने कुछ पंक्तियें लिखीं। जिनका

(८२)

ज्ञान या तो लिखने वाले को होगा या श्रीमती को जिसको लिखा गया है उस को होगा। इस पत्र लिखने में कुछ समय भी लगा और जब ब्रांउन दोबारा कमरे में आया उस समय रैमूर लिफाफे पर श्रीमती का पता लिख रहा था।

ब्रां० — सुनाओ यार, पत्र लिख लिया। इस प्रश्न का उत्तर रैमूर ने यह दिया कि पत्र दिखलाकर मेज पर रख दिया।

ब्रां० — अच्छा अब इस पत्र को किसी विश्वास पात्र नौकर के द्वारा भेज दिया जावे और कह दिया जावे भी कि उत्तर लेकर आवे। इससे पूर्व की रैमूर हाँ या न कहे एक भृत्य अंदर प्रविष्ट हुआ।

रै० — (नौकर से), क्या बरजस उपस्थित है या कहीं बाहर गया हुआ है।

नौ० — हजूर, मैं देखकर निवेदन करता हूँ। (यह कहकर नौकर बाहर चला गया)

ब्रां० — यह बरजस कौन है?

रै० — मेरा नौकर है।

ब्रां० — मुझको आशा है कि वह विश्वास पात्र होगा। क्योंकि तुम जानते हो कि यह मामला नाजुक है।

रै० — बरजस बड़ा ईमानदार आदमी है यद्यपि मेरे पास थोड़े से समय से नौकर है परंतु बहुत विश्वासपात्र है।

ब्रां० — अभी यह बातचीत हो ही रही थी कि बरजस कमरे में प्रविष्ट हुआ। यह व्यक्ति नौजवान और कमजोर जैसा मालूम होता था। लेकिन बुरा ढांचा मालूम न देता था। रैमूर अभी कुछ देर ही लगा रहा था कि ब्रांउन ने पत्र को उठाकर बरजस को दे दिया।

ब्रां० — (बरजस से) इस पत्र को ले जाओ (रैमूर से) किस जगह रैमूर?

रै० — महल पाल्टरी को।

ब्रां० —(बरजस से) इस पत्र को लेडी रैमूर साहिबा को दे देना [illegible]-
री लेजाओ और जवाब लेकर वापिस आना समझे।
बरजस— हाँ जनाब।
यह कहकर बरजस पत्र को लेकर चल दिया और ब्रांडन ने जेब से घड़ी निकाली और रैमूर से कहा अच्छा बताओ कितनी देर लगेगी, और कितनी दूरी पर है। (यह स्थान)
रै०— (आशा और प्रेम से काँपते हुए) मकान तो बिल्कुल पास है देर तो लगनी नहीं चाहिए। परंतु संभव है कि वह कहीं बाहर गई हो। क्योंकि मैंने कह दिया था कि बाहर सैर सपाटे को निकल जाना। शायद गई हु-ई हो या अब चल निकली हो या उत्तर सोचने में कुछ देर लगे (ब्रांडन के कंधों पर हाथ रखकर) यार! मुझसे यह समय क्योंकर गुज़रेगा!
ब्रां० — आदमी बनो, ध्यान तो करो अभी एक घंटा गुजरा तुम मृतकों की सूची में थे अब तुम खारिज होगये हो और जीवित रहोगे।
रै०— क्या तुम ख़याल करते हो कि मुझको इस विजय की प्रसन्नता नहीं है। क्या तुम विचार करते हो कि वह कैदी जिसको फाँसी का हुक्म हो चुका है और फिर स्वयं छूट जाए तो क्या वह स्वतंत्र कर-ने वाले का कृतज्ञ न होगा। लेकिन मैं तुमसे सच कहता हूँ कि उस-के बिना मेरा जीवन तुच्छ और दूभर है।
ब्रां०— अच्छा तो भरोसा रक्खो कि वह तुमको मिल जावेगी या शा-यद मैं ग़लती पर हूँ। अच्छा आओ ज़रा बाहर की हवा खावें औ-र वहीं उत्तर की प्रतीक्षा करें। अच्छा लो सुनो यद्यपि मैं जुआरी नहीं हूँ और न शर्त लगाना पसंद करता हूँ लेकिन इस मामले

में मैं तुमको पाँच सौ दूँगा और (२४) तुम एक देना, यदि मेरा कहना सच न हुआ तो।
रै०—(प्रसन्नता से) यार, भगवान करे तुम ही जीत जाओ।

।।बारहवाँ परिच्छेद।।

स्टीफन सालिश्री शादी से एक घंटा पूर्व पवबेटन रैलवे स्टेशन पर रेल से उतरा और बहुत बदमिज़ाज दिखाई देता था। अभी वह स्टेशन पर पहुँचने भी न पाया था कि ऊपर की जेब से एक पत्र निकाला। यह पत्र बड़े बेढंगे लेख में लिखा गया था और शायद ही उन तीन पंक्तियों में कोई शब्द ठीक लिखा हुआ हो। लिफ़ाफ़ा भी बहुत तुच्छ सा था। और स्थान २ पर धब्बे पड़े हुए थे। जिस को स्टीफन सालिश्री पढ़ २ कर (की तकलीफ़) आनन्दित होता था हम पाठकों के मनोरंजन के लिये पत्र लिख देते हैं।

"प्यारे स्फ़ीक (शफ़ीक़) स्टीपन (स्टीफन) सहब (साहब) अच्छा होगा जदि (यदि) आप तुरत (तुरंत) ही आ जावें, ग्रीनदिल (ग्रीनहिल) में एक नई घटना हुई है जिसमें आपकी जनकरी (जानकारी) अतंत (अत्यंत) अवश्क (आवश्यक) है। आपकी परेम पातरी (प्रेमपात्री) जूडिथ" स्टीफन को यह (प्रेमपत्र) पत्र आज से दो दिन पहले मिला था जिसको उसने ऊपर की जेब में डाल लिया था। उसकी इच्छा न थी कि ऐसी जगह जहाँ से वह अत्यंत तिरस्कार से निकाला गया है जावे या पत्र के लेखक से मिले। उसने उसको सर्वथा भूलाना चाहा। परंतु उसके दिल में उधेड़बुन लगी हुई थी। रात को उसने [illegible] पी ली थी।

(८५)

उस समय वह अत्यंत (बदहवास) हो रहा था और उसने पक्का निश्चय कर लिया था कि वह अवश्य एबरन गांव को जावे और यदि उसको व्यर्थ कष्ट दिया गया है तो लेखक को उसकी बेहूदगी का मज़ा चखावे। स्टेशन से उतर कर उस रास्ते से जो ग्रीनिच को जाता था बच कर वह दूसरी ओर हो लिया। और एक गली में से होता हुआ ग्रीनिच के एक जंगल में चला गया जिससे ( ) एक दो फर्लांग की दूरी पर एक मकान था। जिस समय वह पेड़ों से गुज़र रहा था तो जंगली पक्षी उसके सामने से उड़-२ कर इधर-उधर जाने लगे। उसने इनको ललचाई हुई आँखों से देखा और दिल में कहने लगा कि ईश्वर जाने वह दिन कब आवेगा जब यह शिकार मेरी ( ) सम्पत्ति होगा। जंगल पार करने के पश्चात् स्टीफ़न एक मैदान में पहुँचा जहां पर किसी चौकीदार की झोंपड़ी थी। यह स्थान अति मनोहर था। झोंपड़ी के सामने एक अति मनोहर छोटा सा बगीचा था जिसमें भाँति-२ के फूल लगे थे। रास्तों पर पालतू कबूतर अति मस्ताना तौर पर गुटरगूं-२ कर रहे थे और कुछ पंख फैलाये हुए धूप का आनंद ले रहे थे। यह मनोरंजक दृश्य स्टीफ़न को कुछ अच्छा प्रतीत न हुआ। वह एक मोटे से पेड़ की आड़ में छिपकर खड़ा हो गया और मुँह से एक लंबी सीटी बजाई। सीटी की आवाज़ पर एक लड़की घर से निकली। वह अपने चारों ओर देखती जाती थी कि उसको कोई देख तो नहीं रहा। वह धीरे-२ सावधानी से स्टीफ़न की ओर चली।

[illegible] सुंदरी थी। उसके

कृष्ण केश, कुआरी आँखें और बारीक ~~(~~ सुन्दर अंग थे। और वह गेहुँए रंग की आवारा मिजाज स्त्री प्रतीत होती थी।
स्त्री — (स्टीफन सालिदश को पेड़ की आड़ से अपनी ओर आते देखकर धीरे से) भगवान को धन्यवाद है तुम आतो गये।
स्टीफन सालिदश:— हाँ मैं आ गया। जूडिथ! तुमने पत्र में क्या लिखा था मैं समझा न था। यह कहकर सालिदश ने जूडिथ की गर्दन में हाथ डाल दिया और चुंबन लिया।

जूडिथ — (जिज्ञासा की दृष्टि से) माल्म होता है कि तुम इस जगह आने से कुछ उदास हो।

सा० — जूडिथ, मैं तुमको देखकर बहुत प्रसन्न होता हूँ और इसी कारण से यहाँ आया हूँ, यदि ऐसा न होता, तो शायद न आता। क्योंकि लंडन छोड़ना आसान नहीं है।

जू० — तीन दिन गुजरे जबकि मैंने तुमको चिट्ठी लिखी थी।

जूडिथ बोलने में तो खासी फर-र और ललित इंगलिश बोलती थी यद्यपि लिखना जैसा है वह पाठकों के सामने दिखाया जा चुका है।

सा० — ठीक है मेरे पास तीन दिन हुए जब तुम्हारा पत्र पहुँचा था परन्तु मैं इतना व्यग्र था कि आज ही कठिनता से आ सका हूँ।

जू० — अब आने से लाभ ही क्या है। समय बीत चुका।

सा० — इसका मतलब?

जू० — पहले तो मैं सोचती रही कि तुमको पत्र लिखूँ या न लिखूँ। क्योंकि मुझको लिखने से घृणा है परन्तु मैंने ख़याल किया कि तुमको सूचना देनी ~~होई~~ चाहिए। सुनाओ विवाह की भी ~~[illegible]~~ कुछ खबर है?

सा० — [illegible] नई हुई बढ़ना क्या है। यह

५३८

तुम मुझसे ← आज किस ढंग की बातचीत कर रही हो।

जू० — अच्छा सुनो, तुमने मुझसे कहा था कि लार्ड साहब की मृत्यु पर तुम इस जगह के अधिकारी बन जाओगे। बशर्ते कि लार्ड साहब शादी न करें और उस समय तुम मुझसे निकाह कर लोगे।

सा० — (जूडिथ को आलिंगन कर और चूमकर) बिल्कुल ठीक है और मैं फिर वही शब्द कहता हूं कि मैं अवश्य शादी करूंगा। भगवान करे वह कल ही मर जावे। अब बताओ कि तुम्हारी देर, देर के शब्द दुहराने से क्या अभिप्राय है।

जू० — (सालिश से अलग होकर) देर तो होगई, क्योंकि आज रैमूर साहब की शादी है।

सा० — (बे औसान होकर) हे भगवान, तुम क्या कह रही हो। मैं क्या सुन रहा हूं।

जू० — लार्ड साहब की आज शादी है।

सा० — (जिसके चेहरे पर मुर्दनी सी छा गई थी) जूडिथ! क्या तुम उपहास कर रही हो! तुमको मालूम है क्या कह रही हो।

जू० — जी हां, यह बिल्कुल ठीक है, क्योंकि लार्ड साहब मिस टैम्पैस्ट के साथ शादी करते हैं जो कि कुछ दिन हुए आपके सामने यहां खाना खा गई हैं।

सालिश — (सन्तोष से) अशुद्ध है। यह कभी सच नहीं हो सकता। अभी कुछ दिन हुए जब मैं इस जगह था तो मुझ से रैमूर ने स्वयं कहा था कि मैं ऐसी हालत में किस तरह शादी कर सकता हूं। जूडिथ, क्या तुमको भ्रम तो नहीं हुआ।

जू० — इस में कोई भूल नहीं है। तीन दिन हुए जब बरजिस ने मुझसे कहा था कि शादी होने वाली है और सर्वथा गुप्त रूप से होगी। यह बिल्कुल अचानक हुआ है। लार्ड साहब लगातार कुछ दिन से पादरी के यहां जाते रहे हैं और मिस

टैम्पैस्ट से प्रेम प्रकट करते रहे हैं।

सा० — (सिर से टोपी उतार कर और मस्तक से पसीना पोंछकर) हे भगवान! मैं तो कहीं का न रहा। यदि यह शादी हो गई तो मेरे हत्थे कुछ न चढ़ेगा। हाय, मैं उस रात उस से क्यों लड़ पड़ा।

जू० — क्या तुम इस शादी को रोक नहीं सकते?

सा० — रोक सकता? मैं किस तरह रोक सकता हूं। भगवान, दया दया, मैं इस शादी से तबाह हो गया हूं।

जू० — स्टीफन, मुझे इस घटना से बहुत दुःख हुआ है।

सा० — दुःख जैसा दुःख, दुःख तो होना चाहिये। तुम को दुःखी होने का पर्याप्त कारण है। अच्छा बतलाओ किस समय और किस जगह शादी होगी।

जू० — मेरा विचार है दो बजे। इसी गांव के गिर्जा में होगी।

सा० — हाय, अब तो दो भी बजने वाले हैं। अब रैमूर से मुलाकात करने का और उस को बहकाने का समय भी नहीं रहा। और शब्दों से उस को न कुछ प्रभाव ही होगा। हाय उसने तो मुझको दूध में से मक्खी की तरह निकालकर बाहर फेंक दिया है और शादी कर ली। यह कहकर सालिश्य पतलून की जेबों में हाथ डालकर पेड़ का सहारा लगाकर खड़ा हो गया। इस दुःख ने इसपर इतना प्रभाव डाला कि यह एकाएक रोगी दीखने लगा। एकाएक सोचते कुछ ध्यान में जो आया तो अपने आप कहने लगा —

सा० — मुझ को कुछ प्रबन्ध अवश्य करना चाहिये अन्यथा मैं पागल हो जाऊंगा।

मुझ को गिर्जा और ... दोनों ... (अंग्रेज़ी है ... आता है)

जू० — क्या तुम वापिस आओगे? मैं प्रतीक्षा में रहूं!
सा० — हां २ अवश्य, मुझको कुंए के समीप मिलना। मैं सीटी बजा दूंगा।

यह कहकर वह जल्दी से वहां से चला गया। इतना घबराया हुआ था कि जूडिथ का चुम्बन लेना भी भूल गया, यद्यपि उसने चुम्बन देने के लिये अपने कपोल आगे कर दिये थे। जूडिथ भी प्रेम और जोश भरे दिल से उस की इस विश्वासघातकता को देखती रही। प्रेम, उपेक्षा, संदेह सारे उस के अन्दर से प्रकट मालूम हो रहे थे। एकाएक जो कुछ ध्यान आया तो उसने उसी पेड के सहारे लग कर रोना शुरु किया। यद्यपि वह सालिश्वरी के चरित्र से अधिक परिचित न थी। उस को एक झूठा पुरुष समझती थी परन्तु यह सब होने पर भी उसका विचार था कि यदि मेरा भाग्य ऐसा हुआ कि मेरी शादी स्टीफन से हो गई तो मैं सारी आयु उसकी सेवा इस रीति से करूंगी जिस तरह कुत्ता अपने मालिक की करता है। थोडी देर बाद वह अपनी झोंपडी को वापिस आ गई और थोडी देर मकान में ठहर कर फिर बाहर निकल कर खडी हुई। फिर मकान के पिछवाडे से हो कर उस कुंए के पास पहुंच गई जिस की ओर स्टीफन सालिश्वरी का इशारा था। वह ज्यों ज्यों उस जगह प्रतीक्षा करती रही वह उकता कर वापस जाने वाली थी कि अपने पिता के लिये चाय तैयार करे कि अचानक सालिश्वरी को आता देखकर रुक गई। और जब स्टीफन उसके पास पहुंचा तो जूडिथ ने देखा कि उस का सांस फूला हुआ है और दम उखड़ा हुआ है।

सा० — धन्य ईश्वर, तुम यहां उपस्थित हो। देखो मैं तुमसे आज एक छोटा सा

काम लेना चाहता हूं।

जू० — क्या लार्ड साहब की शादी हो गई है?

सा० — हां, हो गई। परन्तु एक बात आश्चर्यजनक है कि दुलहिन ब्याह के बाद तत्काल ही अपने बाप के घर चली गई है।

जू० — क्या चली गई?

सा० — हां, परन्तु इसमें कोई रहस्य है। मैं मकान पर गया था और शहनशीन के नीचे खड़ा रहा, जहां कि लार्ड रैमूर ने उस दिन तुम्हें और मुझे इकट्ठे देखा था। यद्यपि मुझको सारी बातों का पता तो न चला पर कुछ थोड़ा बहुत सुन ही लिया है। रैमूर ने अभी २ एक पत्र बरजिस को दिया है कि वह उस को लेडी रैमूर के पास प्राल्टरी ले जावे और उसका उत्तर ले कर आवे। प्यारी जूडिथ, मैं उस पत्र को उड़ाना चाहता हूं। क्या तुम मुझको ला दोगी?

जू० — क्या मैं लाऊं?

सा० — हां हां तुम। अभी बरजिस कोठी से रवाना भी नहीं हुआ है। वह इसी मार्ग से सड़क २ प्राल्टरी को जायेगा। तुम उस को रोको और पत्र उस से ले लो। अब खेल तुम पर निर्भर है। (अधमिरी दृष्टि से जूडिथ को देखकर) अब चुप बैठने का समय नहीं है। बड़ा नाजुक मामला है। तुम को यह तो मालूम है कि बरजिस तुम पर अनुरक्त है। (जूडिथ को क्रोधित होते देखकर) जो चाल तुम से चल सके, चलो परन्तु उससे पत्र ले लो। देखो कोई तिरिया चरित खेलो। यदि तुम शीघ्रता करो तो तुम उससे मिल सकती हो। प्यारी जूडिथ, शीघ्रता करो। जिस तरह भी हो सके पत्र उस से ले लो।

इस घबराहट में सालिश्र ने जूडिथ को हाथ से धकेल भी दिया। पहले जूडिथ हिचकिचाई परन्तु अन्त में चल ही पड़ी और कुछ दूर आगे चलकर तेज़ दौड़ने लगी और सड़क के निकट पहुंचकर कदम २ चलने लगी। और फाटक पर पहुंच कर प्रतीक्षा में खड़ी हुई। और फाटक के सहारे खड़ी होकर गाने लगी। पर उस का ध्यान सड़क पर ही लगा हुआ था। अभी कुछ क्षण भी न बीतने पाये थे कि बरजिस सड़क २ आता हुआ दिखाई दिया। उसके हाथ में फल था और वह धीरे २ चल रहा था। परन्तु जूडिथ की आवाज़ सुनकर वह अति प्रसन्न हुआ और फाटक पर जूडिथ के पास पहुंच गया।

बरजिस — अहा, जूडिथ तुम हो।

जूडिथ — (चौकन्ना होकर मानों बरजिस के अचानक आने से वह डर गई हो) ओहो मि० बरजिस! मैंने तुम को आते देखा ही नहीं। यह कहते हुए जूडिथ ने स्वर में एक विशेष परिवर्तन उत्पन्न कर लिया था और ऐसे कोमल ढंग से बोली थी जैसे कि कोई अनुरक्ता कामिनी अपने अनुरागी पुरुष के आने से प्रसन्न होती हो और फिर अपनी प्रसन्नता को छिपाती है। सांस भी शीघ्र २ चल रहा था जिससे कि छाती का उतार चढ़ाव साफ़ दिखाई देता था। नीचा ध्यान करके वह तिरछी निगाह से देख रही थी मानों उसने जाल बिछाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी।

बरजिस — (जूडिथ के समीप पहुंचकर) जूडिथ! तुम इस जगह क्या कर रही हो?

जू० — मैं घर के काम करते २ थक गई थी कि अकेले जी उकताया।

जी में आया चलो ज़रा सैर ही कर आओ। बस चली आई। परन्तु मुझ को तुम्हारे आने की खबर न थी। अकस्मात तुम आ निकले।

बरजिस — तो मानों आप मुझसे मिलकर प्रसन्न नहीं हुईं।

जूडिथ — (अपने हाथ को फाटक पर से ऐसे ढंग से हटाकर जिससे दूसरा व्यक्ति भी उसी ढंग से फाटक पर खड़ा हो सके) मेरा यह मतलब तो नहीं है जो आपने निकाला है।

जूडिथ के इस कथन से अधीर होकर बरजिस भी फाटक पर हाथ टेककर खड़ा हो गया। उसको जूडिथ आज अधिक रूपवती प्रतीत हो रही थी।

बरजिस — (सड़क की ओर देखकर) मैं ठहर नहीं सकता, जाऊंगा।

जूडिथ — इतनी जल्दी क्या पड़ी है।

बर० — मैं यह वाहियात पत्र प्राल्टरी को लेकर जा रहा हूं।

जू — तो क्या तुम नहीं ठहरोगे। मैं तो सोचती थी तुम मुझसे शादी का सारा हाल बतला कर जाओगे।

बर० — जूडिथ, तुम जानती हो कि पराई अधीनता बुरी होती है। मैं बड़ी खुशी से ठहरता, परन्तु यह पत्र अत्यन्त आवश्यक है और तत्काल जाना चाहिये।

जू० — (अनुराग दिखलाते हुए लजीली आंखों से) यदि तुम कहो तो मैं अपने छोटे भाई को यह पत्र देकर भेज दूं। वह तुमसे तेज जावेगा। मैं कह दूंगी कि गधे की चाल जावे और घोड़े की चाल वापिस आवे, बोलो। पत्र दोगे या तुमको मुझपर भरोसा नहीं है?

बर० — ~~मैंने~~ की एक ही कही, प्यारी जूडिथ! मैं तो जान तक तुम पर से न्यौछावर करने को तैयार हूं।

जू० — अच्छा तो लाओ पत्र दे दो। मैं अपने घर को जाती हूं। यह कहकर जूडिथ ने बरजिस के हाथ से पत्र ले लिया और यह कहती हुई कि तुम इसी जगह खड़े रहना। मेरे पीछे २ मत आना, पिता घर में है। बरजिस को उसी जगह छोड़कर वह दौड़ गई और पत्र को हाथ में छिपाकर कुंए के पास पहुंच गई। सालिश उस को आता देखकर खड़ा होगया और घबराकर कहने लगा कि सुनाओ पत्र मिला या नहीं। और जूडिथ ने बिना संकोच किये ~~उसी~~ पत्र को उसके सुपुर्द कर दिया। और वह लिफाफा फाड़कर पत्र पढ़ने लगा। ज्यों २ पत्र पढ़ता जाता था उसके चेहरे पर आशा की झलक पड़ती जाती थी और आश्चर्य उत्पन्न होता जाता था। उसने रेमू के स्वस्थ होने का हाल पढ़कर यह अनुमान लगाया कि वह अपनी पत्नी को धोखा दे रहा है। क्योंकि वह कभी स्वस्थ न होगा।

जूडिथ — सुनाओ क्या खबर है।

सा० — (जो पत्र पढ़ने में ऐसा मग्न था कि जूडिथ उसके ध्यान से उतर गई थी) हैं! क्या कहा, हां मामला बिल्कुल ठीक है। यह कहकर उसने पत्र को कोट की ऊपर वाली जेब में रख लिया।

जूडिथ — बताओ, मैं अब क्या उपाय करूं। बरजिस मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।

(प्रश्न-) सालिश — सुनाओ, पत्र किस चालाकी से लिया।

जूडिथ — यह मत पूछो। मैंने उससे कहा कि लाओ पत्र को मैं अपने भाई के हाथ भेजे देती हूं।

सा० — प्यारी जूडिथ! तुम बड़ी चतुर हो। यह पत्र मेरे बड़े काम आयेगा।
जू० — बताओ, मैं क्या उपाय करूं। वह तो मेरी प्रतीक्षा में खड़ा है।
सा० — तुम वापिस चली जाओ और उससे बातें करने लगो। मैं थोड़ी देर बाद सीटी बजाऊंगा। तुम उससे कहना कि यह मेरे भाई ने सीटी बजाई है और उत्तर लेने के बहाने चली आना।

जूडिथ वापिस चली गई और बरजिस ने यह आधा घंटा बड़े मजे में गुजारा। वह फाटक पर इस तरह से झुका खड़ा था कि कई बार उसके कपोल जूडिथ के कपोलों से छू जाते थे। इसी बीच में दोनों में बड़े २ प्रेम रहस्य की बातें होती रहीं और बरजिस जूडिथ से अपना अनुराग जतलाता रहा। इसी बीच में सीटी की आवाज़ आई।

जूडिथ — लो जेम्स (भाई का नाम) आ गया, मैं उत्तर ले आऊं। मि० बरजिस, क्षमा करना, मैं नहीं चाहती कि वह हम दोनों को देखे क्योंकि पिता की नाराज़गी का भय है। यह कहकर जूडिथ चली गई और कुछ ही क्षण में वापिस आ गई।

जूडिथ — जेम्स कहता है कि कोई उत्तर नहीं मिला।
बरजिस — क्या तुम को निश्चय है कि कोई उत्तर नहीं मिला?
जूडिथ — हां, जेम्स लेडी साहिबा से मिला। पत्र उनके हाथ में दिया। वे कहने लगीं कि जाओ लाट साहब से कह दो कि लेडी साहिबा उत्तर देने से निषेध करती हैं।
बरजिस — अच्छा ठीक है। अच्छा अब मैं क्षमा मांगता हूं। प्यारी जूडिथ! एक चुंबन क्या नहीं दोगी?

जूडिथ ने चुम्बन देने के लिये कपोल आगे कर दिये परन्तु अभी वह चुम्बन लेने भी न पाया था कि धोखा देकर बरजिस से कहने लगी कि लो पिता जी आ गये और यह कहकर बिना चुम्बन दिये चल दी और बरजिस महल ग्रीनिच की ओर अपना सा मुंह लेकर चल दिया। बरजिस को यह आधा घण्टा जितनी जल्दी गुज़रता मालूम हुआ उतना ही लार्ड रैमूर को यह आधा घण्टा गुज़रना मृत्यु समान होगया। क्षण २ में उस की अवस्था में परिवर्तन होता जाता था। ब्राण्डन और रैमूर दोनों पुस्तकालय वाले कमरे में आगये और रैमूर गहरी सोच में कमरे में टहलने लगा। और उस के कान बरजिस के पैरों की आवाज़ पर लगे हुए थे। ज्योंही बरजिस कमरे में प्रविष्ट हुआ। रैमूर इस प्रकार खड़ा होगया जिस प्रकार कोई सैशन सुपुर्द अपराधी खून के मुकदमे में फांसी या छुटकारे का शब्द जज की वाणी से सुनने की प्रतीक्षा में खड़ा होता है।

बरजिस दरवाजा खोलकर अन्दर प्रविष्ट होगया।

ब्राण्डन — सुनाओ क्या खबर है।

बरजिस — हुजूर कोई उत्तर नहीं मिला।

इस उत्तर पर डाक्टर ब्राण्डन ने विशिष्ट संदिग्ध दृष्टि से बरजिस को देखा, परन्तु वह सर्वथा न घबराया।

ब्राण्डन — तुमने पत्र किस को दिया था?

बरजिस — हुजूर, मिस टैम्पैस्ट साहिबा को। श्रीमान क्षमा करें, मेरा अभिप्राय लेडी रैमूर साहिबा से है।

ब्राण्डन — फिर क्या हुआ?

बरजिस — लेडी साहिबा ने कहा कि जाओ लार्ड साहब से कहो कोई उत्तर नहीं मिलेगा।

यद्यपि ब्राण्डन को सन्देह तो न था फिर भी बरजिस के चेहरे को ~~देखकर~~ अच्छी तरह देखा और यह देखकर कि झूठ बोलने का कोई कारण नहीं है बरजिस को वापिस जाने का इशारा किया। और जब वह चला गया तो लार्ड रैमूर की ओर उसने देखा।

रैमूर (शान्तता से) — बस कुछ मत बोलो। देखा जो मैं कहता था वही हुआ। तुम क्या जानो। उसको मुझ से अणुमात्र भी अनुराग नहीं है। ~~उस~~ का यही अभिप्राय है कि मैं अपने वचन पर स्थिर हूं। और यह है भी ठीक। प्यारे ब्राण्डन। मैं कल तुम्हारे साथ ही चलूंगा।

ब्राण्डन — नहीं २। तुम एकबार स्वयं जाओ और उससे मिल तो लो।

रैमूर — (ब्राण्डन की ओर तिरस्कार भरी दृष्टि से देखकर) तुम सोचते हो कि मैं अब जाऊं और उसे प्रलोभन दूं और मजबूर करूं। क्या तुमने मुझ को निर्लज्ज समझ रखा है। मैं अब कभी उससे न मिलूंगा॥

तेरहवां परिच्छेद
(१३)

विवाह के पश्चात् ग्रीनिच से प्राल्टरी को जाते समय ग्रेशिया और उसके पिता में कोई बातचीत रास्ते में नहीं हुई। मि० टैम्पेस्ट खिड़की के बाहर की ओर देखता रहा और ग्रेशिया सीधी बैठी हुई किसी गहरी सोच में गाड़ी के सामने की ओर देखती रही। बूढ़ा अमीर अपनी पुत्री को देख लेता था कि उसके ऊपर इस घटना से क्या प्रभाव हुआ है

क्योंकि अब वह लेडी रैमूर थी। उसके प्यारे चेहरे से सन्तोष प्रकट होता था। परन्तु आंखों में कुछ बेचैनी अवश्य थी। उस के लाल ओष्ठ एक दूसरे से मिले हुए थे। आप जानते हैं कि जब दुलहिन शादी के बाद अपने दुलहा के साथ गाडी में बैठकर जाती है तो उसके दिल में क्या उमंगें होती हैं। पाठक, क्षमा करना यदि आप ब्याह नहीं गये तो बरातें तो बहुत देखी होंगी। दिल में प्रसन्नता भी होती है और तरह २ के संदेह भी होते हैं। क्योंकि हम विचार करते हैं कि जो हमारी दशा होती है न्यूनाधिक वैसी ही स्त्रियों की भी होती होगी। वह खयाल करती होगी कि मैं इस प्रसन्नता के योग्य भी हूं वा नहीं। कुछ ध्यान गुजरता होगा कि देखिये निर्वाह कैसे होता है। परन्तु यह सब होने पर भी प्रसन्नता ही अधिक होती है पर ग्रेशिया का क्या हाल था। वह तो बेचारी मजबूरन केवल एक घंटे भर के लिये दुलहिन बनी। कुमारी से विवाहिता कहलायी। परन्तु दूल्हा का वियोग भाग्य में लिखा था। यह कोई आश्चर्य भी नहीं है क्योंकि वह कोई असम्भव न थी।

ज्योंही कि गाडी ग्रास्टरी में पहुंची जैसप भृत्य ने आश्चर्य दृष्टि से ग्रेशिया को देखा। लेकिन मि० टैम्पेस्ट को नौकर की यह दृष्टि एक आंख न भायी और कडकती आवाज में बोला —

टैम्पेस्ट — जाओ, मिसिज हिस्टर से कह दो कि वह लेडी रैमूर के कमरे में जावे।

ग्रेशिया लेडी का शब्द अपने लिये प्रयुक्त हुआ सुनकर कुछ चौकन्नी तो अवश्य हुई परन्तु अपने पिता के साथ पुस्तकालय में चली गयी।

ग्रेशिया — पिताजी! क्या यह आवश्यक है कि मैं लेडी रैमूर कहलाऊं?

टैम्पैस्ट — निस्सन्देह, तुम को यदि लेडी रैमूर न कहा जावे तो और क्या कहा जावे।

ग्रेशिया — क्या यह आवश्यक है (सरलता और भोलेपन से) मुझको तो यह

व्यर्थ सा प्रतीत होता है।

टैम्पै॰ — (ध्यान से ग्रेशिया को देख कर) निस्सन्देह अत्यन्त आवश्यक है। तुम पदवीधारिणी स्त्री हो, शादी चोरी से नहीं हुई है। नौकर, गांववाले, और बच्चा २ सब जानते हैं।

ग्रेशिया — (सोचकर) बेशक ठीक है। अच्छा पिताजी, लोग क्या सोचेंगे। तुमने या किसी और ने कारण बता दिया है कि मैं शादी के बाद अपने पति से क्यों अलग होगई हूं।

टै॰ — नहीं, मैंने किसी से नहीं कहा। परन्तु सब लोग लार्ड रैमूर की अवस्था से परिचित नहीं। इसके अतिरिक्त यह उनका या किसी का काम नहीं है कि पतीपत्नी के विषय में दखल देवें।

ग्रे॰ — यह तो सच है कि पति पत्नी के विषय में लोग दखल देने वाले कौन होते हैं। अच्छा पिताजी, क्षमा करें, मैं ज़रा विश्राम करना चाहती हूं।

टैम्प॰ — हां बेटी जाओ, कुछ देर विश्राम कर लो।

यह सुनकर वह अपने कमरे में गई परन्तु अपने मकान का मुकाबिला लार्ड रैमूर के मकान की सजावट से दिल में करती रही। मिसिज़ हिस्टर कमरे में उसकी प्रतीक्षा में खड़ी थी। ग्रेशिया को आते देखकर आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगी।

मिसिज़ हिस्टर — बेगम साहिबा, लाइये मैं आपके वस्त्र उतार दूं। यह प्रथम अवसर था कि ग्रेशिया ने वस्त्र उतरवाने में विवाद न किया।

मिसिज़ हिस्टर — बेगम साहिबा। आप थकी हुई मालूम होती हैं।

ग्रेशिया — हां, मैं कुछ थक गई हूं। परन्तु मुझको आश्चर्य होता है कि तुमने

बेगम साहिबा बेगम साहिबा ~~कितनी कहना~~ कितनी जल्दी सीख लिया है। मालुम होता है तुम इस का अभ्यास करती रही हो।

मिसिज़ हिस्टर — बेगम साहिबा। श्रीमती को इसी प्रकार संबोधन करना चाहिये। और मैं सोचती रही हूं कि कहीं मैं भूल न जाऊं। आज तो श्रीमती के लिये एक परीक्षा का सा दिन था। (ग्रेशिया ने मुंह फेर लिया) बेगम साहिबा! मैं जानती हूं क्योंकि मुझ पर भी यह बीत चुकी है। (मैं अपनी धृष्टता तथा उद्दण्डवक्तृता की क्षमा श्रीमती से मांगती हूं) यह सुन कर ग्रेशिया एक आराम कुर्सी पर लेट गई और मिसिज़ हिस्टर उसके बाल खोलने लगी।

हिस्टर — श्रीमती मैं सच कहती हूं कि नारी की सारी आयु में यही एक दिन होता है जिसको वह कभी नहीं भूलती।

ग्रे० — क्या तुमको बड़ी खुशी हुई थी। क्षमा करना मिसिज़ हिस्टर मैं भूल गई कि तुम विधवा हो और बीती घटना की याद दिलाना तुम्हारे दुःखों को ताजा करना है।

हिस्टर — (भर्राई हुई आवाज में) हां बेगम साहिबा। मेरा पति मर चुका है परन्तु अधिक काल बीत जाने के कारण, मुझे गम खाने का अभ्यास हो गया है। और मैं यह वर्णन करते समय कोई ख्याल नहीं करती। श्रीमती! मुझको बड़ा दुःख पहुंचा था। हम दोनों में बड़ा प्यार था।

ग्रे० — क्या तुम्हारा पति बहुत बीमार रहा?

हि० — हां हुजूर। वह कमजोर तो पहले दिन से ही था। शादी के बाद बीमार हो गया और ऐसा बीमार हुआ कि मर कर ही उठा। वह कहा करता था कि मैं तुम्हारी

विपत्तियों का कारण हुआ हूं। परन्तु बेगम साहिबा! यह अशुद्ध है। मैं उसकी सेवा सुश्रूषा करती रहती थी और इतनी खुश थी कि शादी भी भूल गई थी।

ग्रे० — तुम उसके साथ रह कर उस की सेवा करती रहीं।

हि० — जी हुजूर, अन्त समय तक। (फिर बातों का ढंग बदलकर) क्या आप रात को सोने वाली हल्की पोशाक पहनेंगी? आज्ञा हो तो मैं श्रीमती के लिये चाय ले आऊं?

ग्रे० — मैं बहुत अनुगृहीत हूं। अवश्य ले आओ। (इस समय तक ग्रेशिया अत्यन्त सन्तोषपूर्वक वार्तालाप करती रही और जब मिसिज हिस्टर चली गई तो उसी के शब्दों को अपनी वाणी से दोहराती रही— "मैं उसकी सेवा सुश्रूषा करती रहती थी और इतनी प्रसन्न थी कि शादी की खुशी भी भूल गई थी।" "जी हुजूर, अन्त समय तक"। ग्रेशिया सोते समय भी इन शब्दों को दोहराती रही। जब कुछ विश्राम करके जागी तो सुना कि खाने की घण्टी बज रही है। वह शीघ्र ही वस्त्र बदल कर नीचे आई तो देखा कि मिस्टर [illegible] उसी बेचैनी की अवस्था में कमरे में टहल रहे हैं जैसे प्रातःकाल टहलते थे। खाना प्रारंभ हुआ और मिस्टर टैम्पेस्ट ने जैसप नौकर को विदा कर दिया। और जब तक दोनों खाना खाते रहे टैम्पैस्ट बातें करता रहा। यहां तक कि खाने के बाद वह मद्य पीने लगा।

टैम्पैस्ट — तुम इतनी तो नहीं थकी हो कि मेरे साथ बातचीत भी न कर सको,

ग्रेशिया — नहीं पिताजी। मैं तो बिल्कुल भी नहीं थकी।

टै० — (ग्रेशिया को ध्यान से देख कर) मैं तुम से अपनी बदली हुई दशा के विषय में बातचीत करना चाहता हूं। कुछ से कुछ हो गया है। तुम (क्षमा करना

तुम अब बहुत धनी हो। (कमरे की ओर संकेत करके) इसको भी ठीक कराना चाहिये। यह ठीक प्रतीत नहीं होता कि तुम इस मकान की वर्तमान दुरवस्था में रहो। (चारों ओर देखकर) हम बच गये हैं और सच पूछो तो कायापलट ही हो गयी है। ऋण से छुटकारा हो गया है। बेटी, मैं तुम्हारे इस उपकार को नहीं भूलूंगा। तुमने मुझको बचाया है। अच्छा तो अब मेरा यह कर्त्तव्य है कि मकान को तुम्हारे रहने के योग्य बना दूं। (कुछ रुक कर) मेरा विचार है कि सब से अच्छी बात तो यह है कि लण्डन से एक चतुर कारीगर को बुला या जाये जो सलाह देवे कि क्या परिवर्त्तन किया जावे। इस के पश्चात् सजावट का सामान (ग्रेशिया के मौन रहने की पर्वाह न करके) फिर प्रश्न नौकरों का रहा। निस्सन्देह नौकरों की नियमपूर्वक उचित संख्या होनी चाहिये, तुम को घोड़ों और सुन्दर गाड़ियों की भी आवश्यकता है (ग्रेशिया को मौन देखकर) तुम उत्तर क्यों नहीं देतीं?

ग्रे० — (एकदम चौंक कर) हैं पिताजी, क्षमा करना, मैं सोच रही थी, हां फिर?

टै० — (रूखेपन से) याद रखो, मुझको अब इन वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है, किन्तु तुम्हारे लाभ के लिये ही कह रहा हूं। लार्ड रैमूर की भी यही कामना है।

ग्रे० — क्या लार्ड रैमूर ने स्वयं आपसे कहा था?

टै० — हां हां, तो क्या मैं अपनी ओर से ही यह बकवास कर रहा हूं। मेरी और रैमूर दोनों की यह कामना है कि तुम इस शादी से कुछ तो लाभ उठाओ। तुमको अब अपने लिये एक विशेष लौंडी की भी आवश्यकता होगी। (ग्रेशिया पूर्ववत् मौन रही) मैं नहीं [illegible] इस प्रबंध से लाभ उठाना नहीं चाहता। मैं ईश्वर को

साक्षी जान कर कहता हूं कि मैं और रैमूर दोनों तुम्हारी भलाई चाहते हैं।। यह सुनकर ग्रेशिया का चेहरा पीला पड़ गया।

१९६ टै०— मैं सब बातों का निर्णय कल करूंगा। क्यों बेटी! तुम्हारा विचार है कि जैसप को रहने दूं। क्योंकि वह बहुत बूढा तो नहीं है।

ग्रे०— हां पिता जी, उस को रहने दो।

टै०— भई रुपया तुम्हारा है, तुमने ही प्राल्यरी को बचाना है। (कुर्सी पर ऊंचा होकर) मेरा विचार है कि जितने समय प्राल्परी की मरम्मत हो हम कहीं बाहर चले चलें। बताओ किस जगह चलने का विचार है, फ्रांस, स्विट्जरलैण्ड। चलो आज इन झगड़ों को जाने दो, कल फैसला करेंगे। आओ अब गोल कमरे में चलें। यह कहकर मि० टैम्पैस्ट ने अपनी पुत्री का हाथ पकड़ा और दोनों गोल कमरे में गये। ग्रेशिया नियमानुसार पियानो बाजा बजाने लगी। परन्तु उसने वही लार्ड रैमूर का बताया हुआ गीत जो उसने गाया था और लिख कर भी दे दिया था, गाया बजाया। ज्यों २ वह गाती जाती थी उसका चेहरा पीला पड़ता जाता था। राग को समाप्त करके उसने फिर रात की प्रार्थना गाई। और समाप्त हो जाने के बाद अपने पिता की ओर देखा। बूढा कुर्सी पर लेट कर सो गया था। फिर उसने बूढे पिता को प्यार किया और ऊपर की मंजिल पर अपने कमरे में चली गई। उस समय वह बहुत थकी हुई सी मालूम होती थी। नींद स्वप्न में भी न आती थी। मिसिज़ हिस्टर ने सिंगारमेज़ पर मोमबत्तियां जला कर रख दी थीं। शीशे में देखने से उसको अपने चेहरे की जगह रैमूर का चेहरा ध्यान में दिखाई दिया। [illegible] की ओर

गई और पर्दे को खिड़की के शीशे पर से सरकाया। चांद की रोशनी वृक्षों और घास पर खूब निखरी हुई थी। वह अपने दिल से कहने लगी क्या प्यारी रात है। हाय, यह मेरी शादी की रात है। शादी नहीं प्रत्युत बरबादी की। जब वह यह सोच रही थी तो उसने हरियाली के एक कोने पर एक छाया सी देखी। यह कोई पुरुष था। ग्रेशिया ने उसको पहचानने की बहुत कोशिश की, परन्तु वह पुरुष परे सरक गया। उस को क्या पता था कि उस का पति रात के समय केवल उस के मकान के दृश्य से ही प्रसन्न हो रहा है। और वाणी से पुकार रहा है—

"पसें दीवार खड़े होके ज़रा देख तो लो। (१ दीवार के पीछे)

नातैवां करते हैं दिल थाम के आहें क्योंकर॥" (२ कमज़ोर लोग)

इस पद्य के साथ ही नौजवान को प्रातःकाल निकल गया परन्तु शोक कि अपने को भूली हुई ग्रेशिया के कानों ने भी उसे इस अवसर पर धोखा दिया और वह कुछ न सुन सकी। खिड़की पर पूर्ववत पर्दा डालकर वह बिस्तरे पर लेट गई। परन्तु नींद कहां। कभी तो उस को मिसिज़ हिस्टर की बातचीत याद आजाती थी, कभी मि० टैम्पैस्ट की योजनाएं-कि इस रीति पर मकान का परिवर्तन हो, इतने नौकर हों, अमीराना ठाठ हों-उस को सताती थीं। एकाएक इन सब विचारों को दबाकर और स्वार्थ-परता से मुंह मोड़कर वह उठ बैठी और अपने आप ही कहने लगी (शोक) प्रियतम, तू रोगी है, मर रहा है और हम को केवल शरीर की रक्षा और अमीरी का ध्यान आरहा है। मैं तेरी धर्मपत्नी हूं। मेरा कर्त्तव्य है कि मैं तेरे पास रहूं। कम से कम इतना तो होगा कि जब तक तू जीवित है, मैं तुझ को खुश करती रहूंगी। मैं तेरी रक्षा करूंगी, तेरी सेवा करूंगी। तूने मुझको सब कुछ दे दिया है और मैं कुछ भी नहीं कर सकती।" यह कहकर ग्रेशिया ने आलिंगन करने

की कामना से दोनों हाथ फैला दिये। परन्तु वह तो केवल खयाल था। वहां कौन था जो आलिंगन करता। अचानक ही ग्रेशिया की एक चीख निकल गई और अब विचारधारा दूसरी ओर बहने लगी। मैं भूल गई, उसने तो मुझको पृथक् कर दिया। यदि वह मुझसे कहता तो क्या मैं न ठहरती। किन्तु उसने कहा ही नहीं। वह मुझको चाहता भी हो। इन विचारों के आते ही उसके ढंग बदल गये। चेहरे पर अभिमान के चिन्ह पाये गये और वह रोने लगी। गर्म २ आंसुओं ने खूब झड़ी लगा दी। जब ज़रा दिल का गुबार निकल गया तो आंसू पोंछकर आंखें बंद कीं तो क्या देखती है कि लॉर्ड रैमूर विचारों की बनी तस्वीर में उसके सामने खड़ा हुआ बड़ी विनम्रता से कह रहा है। ग्रेशिया प्यारी ग्रेशिया, तू मुझसे पृथक् क्यों हो गई? तू मेरे पास आजा। क्योंकि मैं बिना तेरे रह नहीं सकता। इन्हीं विचारों में ग्रेशिया सो गई। इस बीच में मिसिज़ हिस्टर दो बार कमरे में आई थी कि शायद उसको किसी वस्तु की आवश्यकता हो। सारी रात ग्रेशिया स्वप्न देखती रही। और जब प्रातःकाल हुआ तो स्वप्न से जागकर और आवश्यक नित्यकृत्यों से निबट कर कपड़े बदल सीधी गोलकमरे में पहुंची। मि० टैम्पेस्ट कमरे में बैठा हुआ था और ग्रेशिया को देखकर भौंचक्का हो गया।

टैम्पे०— प्यारी पुत्री! क्या तुम बीमार हो?

ग्रे०— (माथे के बालों को परे सरका कर) पिताजी, मुझसे सहन नहीं होरहा है।

टै०— कैसा सहन, किस का सहन?

ग्रे०— पिताजी! मुझसे यह सहन नहीं हो सकता। हम परले सिरे के स्वार्थी हैं। और भगवान जाने हमारे अन्दर हृदय ही नहीं है। आपको विदित

है कि मेरा पति रोगी है, आपको यह भी विदित है कि वह आसन्न मृत्यु है। क्या यह अशुद्ध है कि वह निर्बल है। यह कहती हुई वह गोल कमरे से जंगलियों की तरह बाहर निकली और टोपी पहन कर प्राल्परी की धरती से गुजरती हुई और लंबे डग भरती हुई ग्रीनिच के मैदान में पहुंची। वहां से चलकर वह उस जगह पहुंची जहां पर कि उसकी मुलाकात प्रथमवार रैमूर से हुई थी। यहां थोड़ी ठहरी और इस स्थान को पवित्र समझकर उसे पेड़ को छुआ जिस पर लार्ड रैमूर पिस्तौल से निशाना लगाता था। और फिर लंगूरियां भरती हुई महल ग्रीनिच पहुंच गई। कमरा खुला हुआ था। खानसामा जो दरवाज़े में खड़ा था ग्रेशिया को देखकर तेज़ कदमी से आगे आया और झुककर सलाम किया।

ग्रेशिया — मैं लार्ड रैमूर से मिलना चाहती हूं। कृपा करके उन को कह दो कि मैं गोल कमरे में उन की प्रतीक्षा कर रही हूं।

खानसामा — बेगम साहिबा! लार्ड साहब तो . .

ग्रे० — (बात काटते हुए अधीरता से) कृपा करके मेरे आने की सूचना उन्हें दे दो। यह कहते ही वह गोल कमरे में चली गई। अब उसको भरोसा और खुशी थी कि जिस समय मेरा पति मिलेगा तो मैं कह दूंगी कि बलिदान और त्याग मैंने नहीं प्रत्युत तुमने किया है। मैं तुम्हारी सेवा के लिये आई हूं और तुम्हारे पास ही रहूंगी।

खानसामा — (जो खांसता हुआ साथ ही साथ आ गया था) बेगम साहिबा! लार्ड साहब यहां नहीं हैं।

ग्रे० — (कुछ हताश होकर) अच्छा तो मैं उनकी प्रतीक्षा करती हूं।

खानसामा — ~~हुजूर वे तो~~ (घबराई हुई आवाज़ में) हुजूर वे तो महल ग्रीनिच

को सदा के लिये अन्तिम नमस्कार करके चले गये।

ग्रे० — ~~चले गये~~ (जिस का चेहरा पीला पड़ गया था) चले गये, महल ग्रीनिच से?

खान० — हुजूर, वे तो ६-३० बजे वाली लंडन को जानेवाली गाड़ी से चले गये।

ग्रे० — (खानसामा को ध्यान से देखकर) कहां चले गये?

खान० — हुजूर, यह तो मुझको मालूम नहीं परन्तु वह रेल लंडन को जानेवाली थी। परन्तु मेरा विचार है कि वह यात्रा को गये हैं क्योंकि बहुत सा असबाब साथ है। (ग्रेशिया के पैर लड़खड़ाते देखकर) हुजूर बेगम साहिबा! आप कुछ बीमार हो गई हैं क्या, मैं किसी नौकरानी को बुलाऊं?

ग्रेशिया ने एक क्षण तक जंगली दृष्टि से खानसामा को देखा और अपने सांस को जो इस दुर्घटना से फूल गया था बड़ी कठिनता से वश में किया।

ग्रे० — नहीं। कोई आवश्यकता नौकरानी को बुलाने की नहीं है। मुझको लार्ड रैमूर से काम था, अब मैं जाती हूं।

खान० — हुजूर! गाड़ी तैयार कराई जावे।

ग्रेशिया — (गर्दन हिलाकर और निराश हृदय से कुर्सी से उठकर) नहीं।

खान० — बेगम साहिबा! यदि आज्ञा हो तो मैं संदेश भिजवा दूं। क्योंकि लार्डसाहब मुझको आदेश दे गये हैं कि उनके पत्र आदि ओलम्पियन क्लब के पते पर भेज दिये जावें।

ग्रे० — नहीं, कोई आवश्यकता नहीं। यह कहकर ग्रेशिया ठंडी सांसें भरती हुई बाहिर निकली। यहां से निकलकर वह उसी जंगल में होली जहां पर कि स्टीफन सालिशरी की मुलाकात जूडिथ से हुई थी। इसी जगह वह एक गिरे हुए पेड़ पर

बैठ गई और यह देखकर कि मेरी निरपराध अभिमानिनी प्रकृति को चोट लगी रोने लगी और कहने लगी, 'वह चला गया, वह मुझसे बचना चाहता था। उस को मुझसे सर्वथा प्रेम नहीं। यह तो मुझे पहले ही विदित था परन्तु आज पता लगा कि उसको मेरी आवश्यकता ही नहीं है। मैं क्यों उससे मिलने गयी। इस निर्लज्जता के विचार ने उसको और पागल बना दिया। अब उसके दिल में और बुरे २ विचार अपने पति की ओर से आने आरंभ हो गये कि वह अपने वचन पर स्थिर रहना चाहता है। और इस ख्याल से कि कहीं मैं ही प्रेम के मारे उसके पास चली जाऊं, कहीं भाग गया है। यद्यपि इस विचार के उत्पन्न होते ही वह रोई तो नहीं परन्तु घुटनों में सिर देकर और दोनों हाथ घुटनों के चारों ओर डालकर बैठ गई। वह स्वयं ही लज्जित होने लगी कि हाय किस मुंह से पिता के पास जाऊं।

अभी वह इन्हीं विचारों में लीन थी कि जूडिथ पेड़ों में से आती दिखाई दी। लेडी रैमूर को बैठा देखकर अन्दर से तो बहुत जली परन्तु प्रत्यक्ष में आदर सहित बोली —

जूडिथ — हुजूर बेगम साहिबा! हुजूर किधर! (दिल में, मैं जानती हूं कि तुझको मुसीबत पड़ी हुई है, परन्तु मुझसे अधिक मुसीबत वह न होगी। तू ही मेरे और मेरे प्रेमी के बीच में आ पड़ी है। तूने ही हम दोनों को विनष्ट किया है। मैं तुझसे दिल से घृणा करती हूं और भगवान से प्रार्थना करती हूं कि कल दो बजे दिन से पहले तू मर जावे।)

ग्रेशिया जूडिथ को देखकर खड़ी हुई परन्तु उसके पैर मूर्छित लड़खड़ा रहे थे। कहना कुछ चाहती थी मुंह से निकलता कुछ था। जूडिथ ने दिखावे के ढंग से पूछा कि क्या हुजूर कुछ बीमार हैं?

ग्रे० — नहीं, तुम यहां कैसे आई। तुम्हारा नाम क्या है?

जूडिथ — (झुककर, सादर) हुजूर! मेरा पिता लार्ड साहब का शिकार रक्षक है। मेरा नाम जूडिथ बाउल्ज़ है। हमारी झोंपड़ी इसी जंगल में समीप ही है। हुजूर थोड़ी देर को दीन कुटिया में चलकर ज़रा दम लेलें।

ग्रेशिया — नहीं, मैं धन्यवाद देती हूं। मेरी तबीयत कुछ घबरा रही थी और मूर्च्छा सी आती प्रतीत हुई थी। इसी कारण से मैं बैठ गई थी। अच्छा, कृपा करके प्राल्टरी का सब से निकट का मार्ग बता दो।

जूडिथ — हुजूर, कृपा करके मेरे साथ २ हो लें। मैं सीधे रास्ते पर हुजूर को डाले देती हूं।

यह कहकर जूडिथ ग्रेशिया को पगडण्डी के मार्ग से लेजाकर एक छोटे से फाटक के पास पहुंची। आगे का मार्ग ग्रेशिया को विदित था। उस ने जूडिथ को धन्यवाद दिया और चल दी। और जूडिथ भी प्रणाम कर के ग्रेशिया को जाते हुए देखती रही। जब ग्रेशिया दृष्टि से ओझल होगई तो फिर अपने आप अपने दिल से कहने लगी; "भगवान करे ग्रेशिया तुझ पर ढाई घड़ी का हैजा आवे। जैसे तूने मेरा दिल तोड़ा है तेरी भी मचकती अर्थी निकले॥"

(इति १३वां परिच्छेद समाप्त)

॥ १४वां परिच्छेद ॥

स्टीफन सालिटर जूडिथ को बरजस की ओर रवाना करके स्वयं स्टेशन पर आया और सायं की गाड़ी में सवार होकर लंदन पहुंच गया। आधी रात बीत चुकी थी। रेल से उतरते ही सालिटर ने एक किराये की गाड़ी ली। लंडन के दक्षिणी भाग में जाकर एक गली में गाड़ी ले गया और एक मकान के दर्वाज़े पर ठहरा दिया। यह मकान

पुराने ढंग का दर्वाजे के किनारे पर बना हुआ था। गाडी से उतर उस ने घण्टी बजाने के बटन को दबाया। एक क्षण पीछे एक बुढ़िया ने द्वार खोला। सालिक ऊपर की मंजिल पर चढ़ने लगा। ज्यों २ वह सीढ़ियां चढ़ता जाता था कि अत्यन्त दुर्गन्धित धुंआँ उसके दिमाग में प्रवेश करता जाता था। इस भाग में बिल्कुल अंधेरा था और ऊपर की सीढ़ी से जो उसका पैर चूका तो वह गिरते २ बचा और एक द्वार के सहारे लग कर खड़ा हो गया। कुछ मिनिट तक वह द्वार को खटखटाता रहा और धुंए की दुर्गन्धि से व्याकुल होता रहा कि इसी समय द्वार थोड़ा सा खुला और एक पुरुष दिखाई दिया। सालिक द्वार को धक्का देकर कमरे में चला गया। द्वार खोलने वाले पुरुष ने सावधानी से द्वार को फिर वैसे ही अन्दर से बंद कर दिया। यह पुरुष दुबला पतला और बौना था और दर्शन करने से निस्सन्देह "शाह दौला का चूहा"[1] दिखाई देता था। इन आंखों से उस की आयु का अनुमान लगाना बहुत कठिन था क्योंकि उसको जवान या बूढ़ा कहना आसान न था। मूंछ दाढ़ी सफाचट, अंग्रेजी की परिभाषा में क्लीन शैशन कहना उचित होगा। आप भगवान की कृपा से सिर से बिल्कुल गंजे थे। शायद अधिक आयु के कारण या समय के हाथों जूतियां खाते २ गुद्दी सर्वथा मुर्गी के अण्डे की तरह साफ़ और चिकनी हो गई थी। आंखें (उमर ऐय्यार) की आंखों से छोटी २ थीं। हमारा अपना विचार है कि उसके हँसते समय - शायद उस की आयु में कभी ऐसा दिन आया होगा - तो वे अवश्य अन्दर घुस जाती होंगी। परन्तु हाथ पाँव और डीलडौल की दृष्टि से आंखों का अनुपात बिल्कुल रेखागणित के अनुसार था। कोट के स्थान पर इस महापुरुष ने एक जनाना वास्कट पहनी हुई थी और देखने से वह पगली का स्वांग मालूम होता था।

1 — [illegible]

हाथ जिसमें हड्डी और खाल के अतिरिक्त मांस का नाम नहीं था, बनमानुष की तरह लंबे२ थे। नख सिंह के नखों से भी तीक्ष्ण और औषधियों के लगने से ऐसे कठोर और खुर्दरे हो गये थे कि यदि कभी कटवाने का कष्ट सहता तो बिचारा नाई अपने नहरने के टूटने से प्रत्यक्ष में नहीं तो मन में अवश्य उसे कोसता। पाठक! घरवाले से तो हमने आपका परिचय करा दिया अब जरा मकान का भी हाल सुनें।

उस कमरे में जिस में आप बैठे हुए थे और जिस में सालिश प्रविष्ट हुआ था, कोई सजावट का सामान न था। कोने में एक ओर एक बड़ी अंगीठी थी, जिसने निःसन्देह कमरे का आधा भाग अपने अधिकार में कर रखा था, दहक रही थी। इस पर एक विचित्र प्रकार की देगची चढ़ी हुई थी। ऐसी देगचियां आपको वैद्यों अत्तारों के यहां मिल जायेंगी, इसके पास ही छोटी२ कुल्हियां, शीशियां, आतशी शीशियां और इसी प्रकार की अन्य दवासाजी के शीशे के पात्र रखे हुए थे। इस देगची से वह धुंआं जिसने सालिश के दिमाग को चक्कर दे रखा था, निकल रहा था। दूसरी ओर अलमारी में शिकार, घुड़दौड़, घोड़ों और चाबुकसवारों के चित्र लटक रहे थे। मानों पूर्वोक्त मजाक पीछे कही हुई बात से सर्वथा भिन्न था। पुस्तकों में कुछ एक तो रसायनविद्या की थीं, शेष घुड़दौड़ आदि खेलों की थीं। एक छोटी सी मेज पर जिसके चारों पांव कीड़ों से घुन जा चुके थे, एक रोग की पुस्तक, कुछ जंग लगे हुए जर्राही के यंत्र और एक बांसुरी पड़ी हुई थी। और खूंटी पर एक शिकारी कोट जिसके सीप के बटन और मखमल का कालर था, लटक रहा था। फर्श पर एक दूरबीन पड़ी थी। शीशियां आदि देखकर, आप अवश्य कह देंगे कि यह पुरुष

रासायनिक या कीमियागर है, परन्तु बांसरी आदि दृश्य आपको अवश्य तानसेन की याद दिला देगें या कहोगे कि हमारा यह अद्भुत महापुरुष अपने युग का कन्हैया है। परन्तु शेष वस्तुएं अवश्य आपके खयाल को पलटा कर साहब बहादुर के शिकारी होने का प्रमाण देंगी। आपका शुभ नाम पोलसन था। सालिश ज्योंही कमरे में घुसा रूमाल नाक पर रख लिया।

सालिश — यार पोलसन, यह कैसी दुर्गन्धि फैला रखी है।

पोलसन — मुझको तो मालूम नहीं होती।

सा० — खूब, भाई, तुम्हारे नाक होती तो सूंघते। द्वार बंद, खिड़कियां बंद, रोशनदान बंद। मैं चकित हूं कि तुम जीवित किस तरह हो। यह क्या व्यर्थ काम कर रहे हो?

पोलसन — (बन्दर के से छोटे २ हाथ हिलाकर) यार, मैं एक परीक्षण कर रहा हूं। (अंगीठी के पास जाकर) मैं तुम को बताता हूँ पर तुम समझोगे क्या खाक।

सा० — तुम अपने परीक्षणों को भाड़ में डालो। तुम विचार तो करो कि मैं जो असमय में तुम्हारे पास आया हूं तो क्या तुम्हारे परीक्षण देखने आया हूं।

पो० — क्या रात अधिक बीत गई है। भाई, मुझे तो समय का पता ही नहीं, यह कहकर पोलसन अंगीठी के पास सालिश के निकट आगया।

सा० — लो और सुनो। अब तो एक बज चुका है। मैं सीधा थीनि बस से आ रहा हूं। और बुरी २ खबर लाया हूं, अत्यन्त बुरी। यार इधर देखो। थोड़ी सी मद्य और एक सिगार दो जिससे कि मेरे दिमाग़ से इस दुर्गन्धित धुंए का प्रभाव तो जावे।

पोलसन ने अंगीठी के खाने में से एक बोतल ब्रांडी की निकाली और उन्हीं दूर

दूर रखे हुए गिलासों में से एक गिलास में थोड़ी सी डाल दी।

सालिश — यार, ये दवा वाले गिलास साफ भी हैं या मैले हैं।

प्रो० — यह इतने साफ हैं कि आज तक तुमने इनसे अधिक साफ गिलासों में मद्य न पी होगी।

सालिश ने मद्य का गिलास लेकर एकदम समाप्त कर दिया और चुरुट सुलगाने लगा॥

६४) प्रो० — सुनाओ क्या खबर लाये हो (देगची के अन्दर की दवा को कड़छी से चलाते हुए) तुम मुझ से बातें किये जाओ। मैं ध्यान देकर सुन रहा हूं। मैं ज़रा इस दवाई की भी देख भाल कर लूं।

सा० — (ताने से हंसकर) अच्छा हुआ कि पता लग गया। तुम सदा कहते रहते हो रुपया लाओ रुपया लाओ।

प्रो० — निस्सन्देह, बिना रुपये के मेरा काम भी तो नहीं चल सकता। तुम जानते हो कि मेरे भाग्य के जागने में केवल रुपये की आवश्यकता है। फिर देख लेना कि दुनियां के बड़े से बड़े रईस हमारी दशा से ईर्ष्या करेंगे और ईर्ष्या की आग में जल जल कर मरेंगे। (सालिश को हंसता हुआ देखकर) तुम मज़ाक उड़ाये जाओ। परन्तु तुम सिवाय घुड़दौड़, जुआबाज़ी शिकार के और क्या जानते हो। लोग घुड़दौड़, जुएबाज़ी आदि का शौक केवल रुपया प्राप्त करने के लिये करते हैं और इसी कारण से मैं भी तुम्हारे साथ सम्मिलित हुआ हूं। क्योंकि मुझको रुपये की अत्यन्त आवश्यकता है। (देगची की ओर इशारा करके) इस काम के लिये ही, यह कहकर वह फिर कड़छी से दवा को हिलाने लगा।

सा० — मैं तुम को एक पागल से अधिक पदवी नहीं देता। तुम इन परीक्षणों पर व्यर्थ धन बर्बाद कर रहे हो।

पो० — (सन्तोष से) यह तुम्हारी भूल है। अब इस परीक्षण में सफल होने वाला हूं। बस थोड़ी सी कमी रह गई है। और जब तुम अपनी सम्पत्ति पर अधिकारी हो जाओगे और मुझ को रुपया दोगे। नहीं २, प्रत्युत अपना रुपया इस काम पर लगाओगे तो मैं तुम को बतला दूंगा कि तुम भूल पर थे या मैं।

सा० — यार, रोना तो इसी बात का है कि न होगा बांस और न बजेगी बांसुरी। न मैं अपनी सम्पत्ति का कभी अधिकारी बनूंगा और न तुम को धन मिलेगा।

५२ पो० — (दवाई को कड़छी से हिलाते हुए) तुम्हारा अभिप्राय क्या है? इस के क्या अर्थ हैं।

सा० — सुनो पोलसन। मेरे भाई ने शादी कर ली है और मुझे मक्खी की तरह बाहर निकाल कर फेंक दिया है। अब जायदाद को संभालने का मेरा अधिकार क्या रह गया। इसके सिवाय तुम को मालूम है कि मेरी और उसकी लड़ाई भी हुई। मुझको आशा नहीं कि वह नियत राशि से जो वजीफे के तौर पर मुझ को मिलती है एक रुपया भी ज्यादा दे। और भाई असल तो यों है कि अब मुझ को वजीफे की ओर से भी जवाब मिलता दिखाई देता है।

पो० — (घबराकर) हैं। क्या शादी कर ली?

सा० — हां, यार मैं तो दिन दिहाड़े लुट गया। और क्योंकि तुम भी मुझ पर अकड़ते थे। सच पूछो तो तुम भी कहीं के न रहे।

पो० — भाई तुम्हारे दम के साथ मेरा भी दारोमदार है।

सा० — खेल तो बिगड़ गया अब बताओ कि ऋण किस प्रकार चुकावें। हमारी सामर्थ्य तो इतनी भी नहीं कि इसका हिस्सा भी दे दें। मेरी सम्मति मानोगे

यहां से भाग चलें।

पो० — (सालिश को आश्चर्य से देखते हुए) भाई यह तो अचानक बम का गोला गिरा।

सा० — बम जैसा बम। आश्चर्य तो यह है कि रैमूर की मुलाकात को इस स्त्री से अभी कुछ सप्ताह भी नहीं हुए। आश्चर्य है कि नहीं। परन्तु यार सब से अधिक आश्चर्य तो इस बात का है कि शादी के पीछे ही दूल्हा दुलहिन अलग हो गये हैं। वह अपने मैके चली गयी है। कुछ रहस्य अवश्य है। यह कहकर सालिश ने जेब से रैमूर वाला पत्र निकाला और पोलसन के सामने फेंक दिया। और पोलसन ने ध्यान से उसे पढ़ लिया।

६५) सा० — अब बताओ बर्बादी है कि नहीं?

पो० — (धीरे से आंखों को चमकाकर) बर्बादी सी बर्बादी। यह कहो कि बन कर बिगड़ी बर्षों की आशाओं पर तुम्हारी बेवकूफी ने एक क्षण में पानी फेर दिया। न तुम लड़ते न यह बुरा दिन देखते। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है, यह तो बिल्कुल स्पष्ट बात है। कि उसने तुम को उत्तराधिकार से वंचित करने के लिये यह शादी की। परन्तु एक प्रश्न अवश्य उत्पन्न होता है कि उसने दुलहिन को उसके मैके क्यों भेज दिया। ६५

इसपर सालिश ने केवल गर्दन हिला दी।

पो० — (कुछ सोचकर) रैमूर क़ब्र में पांव लटकाये बैठा है। ~~और~~ उसके बाद तुम ही मालिक बनते।

सा० — पर अब तो बीच में यह एक और शैतान की नानी कूद पड़ी।

पोलसन इस बातचीत से उकता कर उठ खड़ा हुआ और बांसुरी उठाकर बजाने लगा। सालिश को पहले तो विचार हुआ कि बांसरी छीनकर फेंक दे

परन्तु बांसुरी ऐसी सुरीली प्रतीत हुई कि वह भी सुनता रहा। एकदम पोलसन ने तान को बंद कर दिया और बांसुरी को खोल कर उस का गंदा पानी या थूक जो कुछ उसकी फूंक से उस के अन्दर चला गया था, फेंका और एकदम किसी विचार से चौंक कर सालिश से कहने लगा।

पो० — सालिश! इस बला को ठिकाने लगाना चाहिये।

सा० — (आश्चर्य से) यह तो अच्छा मजाक है।

पो० — (बेपर्वाही से) यह बहुत ही आसान बात है।

सा० — (भय से चिल्ला कर) आसान, तुम क्या कहते हो?

पो० — (स्टूल को सालिश के बिल्कुल निकट सरका कर धीमी स्वर से) हां, आसान है। सालिश, तुम क्या जानो।

सा० — (इस बात को समझ कर और पीछे हट कर) पोलसन, तुमने तो शैतान के कान भी काट लिये।

६५ ल इस सभ्य शिष्ट शब्द को सुन कर पोलसन केवल मुस्कराया। और क्रम २ से, सालिश के दिमाग में पोलसन का सारा मतलब समझ में आने लगा।

सा० — (सर्वथा धीमी स्वर से) परन्तु पोलसन, यह हो नहीं सकता।

इस वाक्य पर पोलसन मुस्करा दिया॥

(इति चतुर्दश परिच्छेद!)

ता० - २२-५-२९ ता० १५ पृ० लगा १४ यहां तक छपकर आया मासिक यह पत्र शान्ति में छपा लाहौर में

(पन्द्रहवां परिच्छेद)

१५ वां

यह सुन कर स्टीफन सालिश का चेहरा पीला होगया, माथा पसीना और मुंह खुले का खुला रह गया। कमरे में दुर्गन्धि अधिक अनुभव होने लगा।

सिर चकराने लगा और पोलसन के साधारण वार्तालाप से होश व हवास भागे हुए बटेरे की तरह उड़ गये। मनुष्य की बुद्धि ठिकाने न रहे तो वह किसी काम का नहीं रहता। पोलसन अपने मित्र की इस बौखलाहट से मुस्कराया। और उसके गिलास से थोड़ी सी और शराब उंडेल कर मानों चबा २ कर कहने लगा —

पोलसन — सालिटश! मैं तो सोचता था कि तुम भाग्य के बड़े धनी हो। मैंने तुम को सवारी में अद्वितीय पाया। बड़ी से बड़ी घुड़दौड़ में तुमने मुकाबिला किया और सब को मात दी।

६६) सालिटश — (पसीना पोंछकर) वह और बात है। मैं बहुत सी बातों में बढ़ चढ़ कर हूं परन्तु...।

पोल॰ — परन्तु इस मामले में भीगी बिल्ली बनाते हो। सच है मनुष्य मनुष्य में भेद है। मेरी ओर देखो मैं सवारी नहीं कर सकता, न लड़ सकता हूं न कोई और व्यायाम संबंधी कार्य कर सकता हूं। परन्तु ऐसे मामलों में जरा नहीं घबराता।

सालिटश — (कुर्सी पर ऊंचा होकर) मैं सोचता हूं कि तुम पागल हो। तुम्हारा दिमाग इस दुर्गन्धित धुंएं से खराब हो गया है और तुम भले बुरे की पहचान खो बैठे हो।

पो॰ — इसी मामले में मेरा और तुम्हारा मतभेद है। तुम वस्तु की बाह्य झलक पर मरते हो और मैं उसके आन्तरिक गुणों का प्रेमी हूं। मैं जानता हूं पर तुम कूढ़ मगज़ हो। मुझमें छानबीन का अनुराग है। मैं बाल की खाल निकालता हूं। बर्बादी से तुम्हारा क्या अभिप्राय है। यही न कि सभाओं से मुझको पृथक रहना पड़ेगा। उत्तम सिगार और बढ़िया शराब से

तुम को वंचित रहना पड़ेगा। तमाशे में रिजर्व सीट न मिलेगी। याद रखो कि रोटी के टुकड़े से वंचित और रात के आराम से भी दूर हो जाना पड़ेगा। और देश से निर्वासित हो कर दुःख के दिन गुजारोगे। जाड़े की सर्दी और गर्मी की धूप तुम को अलग सतायेगी। मैं तो यह भी सहार लूंगा परन्तु तुम को इस दुनिया में नरक मिल जावेगा। (स्टीफन को अधीर देखकर) मैंने ऐसी कठिनाइयां पहले भी सही हैं। परन्तु जो बात मुझे सहन नहीं होती वह यह है कि मैं अपने परीक्षण को अधूरा नहीं छोड़ सकता। विशेष कर के अब जब कि मैं कृतकार्यता के सर्वथा समीप पहुंच गया हूं। साल्टिश। तुम निरे बुद्धू हो, इन बातों को नहीं समझ सकते। परन्तु मैं अवश्य पागल हो जाऊंगा। मेरा दिल कहता है कि खूब पागलपन चढ़ाऊं और जो मेरे सामने आवे उसका मुंह नोच डालूं।

पोलसन यह वार्तालाप सर्वथा एकाग्रचित हो और गंभीरता से कर रहा था परन्तु साल्टिश कांप रहा था।

पोलसन — साल्टिश, दुनिया में कोई ऐसा काम नहीं है जो मैं अपनी खोज को जारी रखने के लिये न कर गुजरूं।

सा० — चाहे प्राणहत्या का पाप करना पड़े।

पो० — प्राणहत्या नहीं, प्राणहत्या का बाप हो। बहुत लोग इस शब्द को भी बुरा समझते हैं। कारण यह है कि वह इसकी वास्तविकता को ही नहीं समझ सकते। कभी तुमने कहीं यह भी पढ़ा है कि प्राणहत्या एक उत्कृष्ट कला है।

सा० — नहीं, ...।

पो० — नहीं, तुम ने कहां पढ़ा होगा। इस के बहुत ही अच्छे अर्थ हैं। अब मुझ से पूछो, प्राणहत्या के क्या अर्थ हैं।

सा० — (अपनी कुर्सी जरा परे सरका कर) भगवान के लिये अपनी विद्या को अपने तक ही रखो।

पो० — नहीं, मैं अवश्य व्याख्या करूंगा। सुनो शब्द प्राणहत्या के अर्थ यह हैं कि ऐसे व्यक्ति से मार्ग साफ़ कर दो जो तुम्हारी चलती गाड़ी में रोड़ा अटका रहा हो। स्पष्ट है कि ऐसा करने से योग्य पुरुष बच जावेंगे। उदाहरण के लिये, तुम्हारा चचा एक बूढ़ा और दुःखी आदमी है और वह तुम्हारे और दौलत के बीच में विघ्नस्वरूप है। तो मैं तुम को मित्रता के नाते यही कहूंगा और सच यों है कि तुम्हारा सबसे प्रथम यही कर्त्तव्य होना चाहिये कि उसको सांसारिक कष्टों से मुक्ति दिलाओ। और इस भूमण्डल से जिसको वह कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकता, इस रुकावट को दूर कर दो। (सालिश को चकित देखकर) अब तुम अपने ही मामले को लेलो। अपने क्या। प्रत्युत हमारे - क्योंकि हम दोनों ही सांझी हैं — तुम्हारा चचेरा भाई एक असीम धनराशि का स्वामी है और उस के मरने के बाद तुम अधिकारी बनते दीखते हो। वह ऐसी दशा में है कि रुपया उसके लिये कंकरपत्थर है। वह किसी काम में लगा नहीं सकता। मेरे सिद्धान्त के अनुसार उसको बीच में से हटा दिया जाये। मैं तुम से यह सब देर हुई कहने वाला था। परन्तु ध्यान आया कि चलो कुछ दिन में तो वह मर ही जायेगा। (सालिश को पसीना पोंछते देख) परन्तु अब बात बिगड़ गई है। जानबूझकर उसने तुम को इस अधिकार से वंचित करने के लिये शादी की है। दुनिया में मूर्ख से मूर्ख भी

कोई ऐसा न करेगा। शादी करते ही वह उस से अलग हो गया। अब यह हमारा वार है। वह तो मर ही जावेगा, परन्तु बेगम साहिबा से रास्ता साफ़ करना हमारा ठीक कर्त्तव्य है।

सा० —(हंसकर) पोलसन, तुम पागल हो, अन्यथा ऐसी तुच्छ और व्यर्थ की बातें न बकते। मालूम होता है कि तुम जेलखाने की आपबीती सुनाते थे। मैं तो बेवकूफ़ हूं नहीं कि तुम्हारे कहने से पब्लन पाल्टी जाऊं और लेडी रैमूर को गोली मार दूं या किसी नदी नाले में धक्का दे दूं। संक्षेप से तुम्हारा यह इरादा है कि हम दोनों ओल्डवेली के जेलखाने में हों और वहां जल्लाद हमारी गर्दन में फांसी लटकावें।

पोल० — जैसा तुम खयाल करते हो वैसा मूर्ख मैं नहीं हूं। जो लोग ऐसा कार्य करेंगे निश्चय ही उनका यही परिणाम होगा जो तुमने कहा। तुम जानते हो कि इनके सिवाय दुनियां में और तरीके भी कत्ल करने के हैं। तुम तो भेड़-बकरियों की तरह मारकाट करना चाहते हो।

सा० —(कुर्सी से उठकर) भई, तुम्हारी वाहियात बातचीत से मैं तो तंग आगया। मैं जाता हूं। परन्तु इस अवस्था में बाज़ार में से भी गुज़रना कठिन है। कृपा करके थोड़ी सी शराब और पिला दो। यह कहकर सालिश बोतल लेने को उठा परन्तु पोलसन ने लपककर सालिश का हाथ पकड़ लिया और बोतल को दूर रख दिया।

पो० — ज़रा धैर्य धरो। मैं चाहता हूं कि तुम सूफी ~~अवस्था~~ वयस में जो कुछ मैं कहने वाला हूं सुनलो। पीछे जितना जी चाहे पी लेना। सालिश, न्याय को न जाने दो और सोचो कि इस स्त्री का मरना ही अच्छा है और देखो कि जो उपाय मैं कथन करने वाला हूं वह कैसा अच्छा है या बुरा। (सालिश को कांपता हुआ देखकर)

तुम कैसे कायर आदमी हो। प्यारे सालिस्टर, जो हत्या कोई पुरुष कला के रूप में करेगा वह कसाईपन नहीं होगा, जैसे तुमने समझा हुआ है। क्या तुम को मालूम नहीं कि इससे भी अधिक अच्छे उपाय उपस्थित हैं।

सा० — (सिगार मुंह से हटा कर) तो फिर तुम्हारा अभिप्राय विष देने से होगा। यह भी ऐसी कुचेष्टा है जैसे गोली से मार दिया। शीशी पुड़िया आदि जिसमें विष हो इसी प्रकार पुलीस प्राप्त कर लेती है जिस प्रकार कि बन्दूक; पिस्तौल, छुरा आदि प्राप्त कर लेती है। पोलसन, तुम तो बेवकूफी की बातें करते हो।

(१४१) पो० — तुम्हारे कथनानुसार यह ठीक है कि एक बूंद जो दस कोयले के दस कानकुनों को मार दे या चूहेमार विष आदि, निस्सन्देह यह बेवकूफी है। परन्तु प्यारे मित्र, विषों पर विष भरे पड़े हैं। इन्हीं पर क्या समाप्ति है, जैसे संखिया कुचला आदि। परन्तु इन के देने से भी दशा परिवर्तन होती है। कुछ और भी विष हैं जो अपना काम इस प्रकार से कर जाते हैं कि पता ही नहीं चलता। बोर्जेस, हाय क्या २ लोग हो गुज़रे हैं जिन को विषों के हाल का पूरा २ पता था। मिस ल्यूसरेटा बोर्जेस इनमें बड़ी प्रवीण थी। आपको एक गुलाब का फूल दे दिया कि सूंघें, बस वह मारा। आपने ल्यूसरेटा के साथ हाथ मिलाया। उसने अपनी अंगूठी को ज़रा ज़ोर से दबाया, उसमें से एक बूंद निकली और आपके हाथ को लग गई। बस, आप समझ लीजिये कि यह हाथ मिलाना आपका अन्तिम था। उसने (ल्यूसरेटा ने) चमचे से चाय ठण्डी करके आप को भेंट की और आपको कुछ पता ही नहीं, चमचा साफ़ है, केवल इतनी चतुराई की गई कि एक रूमाल से जिसमें विष था, चमचा साफ़ कर दिया है। उस रूमाल का विष चमचे में आया और चमचे से

चाय में और आपके जीवन की समाप्ति है।

पोलसन इस रीति से इन पुराने दोस्तियों की बातें ठण्डी सांसें भर२कर करता था और साल्टिश को भी इस की बातों में अब स्वाद आने लगा था।

पो० —— इनमें न्यूनाधिक लगभग सारे विष विनष्ट हो चुके हैं लोगों की अज्ञानता के कारण इन का ज्ञान किसी को नहीं रहा। एक दो रसायनशास्त्रियों ने उन का पता लगाया तो है किन्तु इनको खुल्लमखुल्ला रूप से बेचना कठिन है। क्योंकि संसार में न्यूनाधिक प्रत्येक पुरुष ऐसा है जो किसी दूसरे से अपना पीछा छुड़ाना चाहता है।

यह कहकर पोलसन उठा और अलमारी में से चार पुस्तकें और चार शीशियां ले आया। उनमें से एक पुस्तक को खोला और थोड़े से पन्ने उलट-ने के बाद कहने लगा (पुस्तक साल्टिश के सामने रखकर), यह देखो, इन चारों, शीशियों का वर्णन इस पुस्तक में लिखा है। और ये सब कम घातक हैं। देखो यह लाल शीशी, यदि मैं इसकी एक बूंद तुम्हारी जीभ से लगा दूं तो तुम एक-दम ऊपर को उछल जाओगे और फिर तुम बस समाप्त हो। तुम्हारी एक चीख भी न निकलेगी। यह दूसरी शीशी हरे रंग की देखो। यह भी घातक है। परन्तु इससे तुम को कष्ट अधिक होगा। यह पीले रंग का विष जो तीसरी शीशी में है बोर्जेस को बड़ा प्रिय था। वह इसकी बड़ी प्रतिष्ठा करती थी। तुम को विष दे दिया गया। तुम को पता भी नहीं। तुम साधारण रीति से सो जाओगे। बस प्रलय के दिन ही उठोगे।

सा० —— (प्रत्येक शीशी को ध्यान से देखकर) तुम विचार करते हो कि कुछ भी खोज न होगी। बताओ कि मृतक के इष्ट मित्र, संबंधी, साधारण डाक्टर या खोज करने वाले इसका पता न चला लेंगे?

प्रो० — निस्सन्देह, वह खोज करेंगे और पता भी चल जावेगा। इसी कारण से तो मैं तुम से उनके विषय में नहीं कहता। ये विष तो पिछले समयों में अच्छे ही काम आते थे जब कि लोग ऐसे विषयों के पीछे नहीं पड़ते थे। परन्तु आजकल के दिनों में तो ये भय से खाली नहीं। किन्तु (सफेद रंग की शीशी को हाथ से उठा कर) यह चौथा विष सर्वथा भिन्न है। इसको डाक्टर लोग स्लो डैथ (धीमी मृत्यु) के नाम से पुकारते हैं। मैं तुम को इसका लैटिन भाषा का नाम नहीं बतलाऊंगा। क्योंकि तुम समझ ही न सकोगे। यह विष रसायन शास्त्रियों की बुद्धि का अर्क समझो। इस समय यह अप्राप्य या दुर्लभ है। और मेरा दावा है कि वर्तमान समय में सिवाय मेरे किसी और को इस का ज्ञान भी नहीं है। यह एकबार नहीं दिया जाता प्रत्युत तीनबार करके तीन २ बूंद दिया जाता है। (सालिश को कांपते और पसीने से भीगते देख कर मुस्कराते हुए) देखो, इस का रंग कोई नहीं और नां ही कोई स्वाद है। यह बिलकुल फीका है। इस की दो बूंदें पोर्ट या शैम्पियन या किसी पानी के गिलास में डाल दो और मेरा दावा है कि दुनिया में कोई चतुर से चतुर मनुष्य भी न पहचान सकेगा कि कोई मिलावट की गई है। जो व्यक्ति उस को पियेगा उसको कोई कष्ट अनुभव न होगा। साधारणतया वह सोवेगा परन्तु उठते समय उस का जी उठने को न चाहेगा। चित्त खिन्न और निर्बलता (दुर्बलता) अनुभव होगी। नां ही (चपल) रोगी किसी डाक्टर के पास जावेगा और गया भी तो डाक्टर उसे पुष्टिकारक औषधियां प्रयुक्त करायेगा। यह ही बात उल्टी सिद्ध होगी पुष्टिकारक औषधों के सेवन करते हुए भी विष अपना प्रभाव करता रहेगा। भला यह प्राणसंहारक विष औषधियों की क्या सत्ता समझता है। इसका

प्रतीकार भी है जैसा कि प्रत्येक विष या दवा का हुआ करता है। परन्तु मुझको विदित नहीं और मेरा विश्वास है कि किसी को भी विदित नहीं। (सालिश को सावधान देखकर) अच्छा, फिर थोड़े दिनों तक सन्तोष करना चाहिये, और फिर दोबारा दूसरी मात्रा देनी चाहिये। डाक्टर लोग मात्रा से अपनी परीक्षा में अभिप्राय खौराक से लेते हैं। इस बार भी इस का वही प्रभाव होगा। पर कुछ अधिक तेजी के साथ और चिरस्थायी। रोगी को अधिक निर्बलता प्रतीत होगी। उस का दिल किसी काम में न लगेगा। थोड़े दिन और ठहरो, और फिर तीसरी मात्रा दे दो। यह मात्रा रोगी के प्राणों को हरने वाली सिद्ध होगी। रोगी अत्यन्त सुन्दरता से कलापूर्ण ढंग से मार डाला जाता है।

सालिश — डाक्टरों को पता नहीं लग जाता?

पो० — नहीं, डाक्टर लोग चकित हो जाते हैं। मृत्यु के पश्चात् या उससे पहले रोगी पर विष का कोई प्रभाव प्रकट नहीं होता। यदि मैं तुम्हारे गिलास में दो बूंदें डाल दूं तो यही हाल तुम्हारा होगा। कोई सिविल सर्जन भी वास्तविकता को नहीं जान सकता।

सालिश — इस दुष्ट विष को उसी जगह रख दो। मुझ को बुरा मालूम होता है।

पोलसन ने सब शीशियां और पुस्तकें पहले के ही स्थान पर रख दीं। सालिश को जो सर्दी मालूम हुई तो अंगीठी के पास हाथ तापने के अभिप्राय से गया परन्तु दुर्गन्धि ने दिमाग को इतना तंग किया कि फिर अपनी कुर्सी पर वापिस आ गया। पोलसन पूर्ववत् देगची की औषधियों को हिलाता रहा।

सालिश — अच्छा यह बतलाओ, तुम्हारा यह विचार है कि हम इस विष से काम लें।

पोलसन — मैं किस तरह दे सकता हूं। परन्तु तुम्हें तो देना ही पड़ेगा।
सालिश — (हँसकर) मुझको फंसवा दो। मैं किस तरह दे सकता हूं।

६८) पोलसन — (मुस्कराकर) अच्छा, बताओ क्या उपाय किया जाये। मैं तुम्हारे स्वभाव से परिचित हूं तुम से विनाश और अपमान सहन नहीं हो सकते। तुम यों किसी जासूस से छिपते फिरना या भीख मांगना पसंद नहीं कर सकते। मैं खूब जानता हूं कि तुम्हारी विलासिता तुम से छूट नहीं सकती। तुम आत्महत्या करने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकते। यदि आत्महत्या का ही विचार हो तो लाओ मैं तुम को अभी ब्राण्डी में थोड़ा सा लालटेन का दूसरा बोजेसि का विष दे दूं। सालिश, यह बड़ा नाजुक वक्त है। देखो एक ओर तो अनन्त धन, मकान, भूमि, शिकार, घोड़े बग्घी, हाथी, शराब और कबाब, नारी का अनुराग, प्रेमालाप, तथा खिताब आदि विलास का जीवन है। मैं जानता हूं कि यदि तुम प्रयत्न करोगे तो खिताब (लार्ड की पदवी) भी मिल जावेगा। दूसरी ओर दारिद्र्य, अप्रतिष्ठा या तिरस्कार का जीवन है और मुझको विश्वास है कि तुम अवश्य या तो किसी तमंचे से या बाजार की सस्ती और निकृष्ट शराब से जीवन को समाप्त कर दोगे। और इन दोनों विरुद्ध बातों के बीच केवल एक निकृष्ट तुच्छ बुद्धि स्त्री है और वह अवश्य ऐसे व्यर्थ जीवन से मृत्यु को अच्छा समझती होगी।

सालिश — पोलसन, यही तो असंभव है। मैं विष दे नहीं सकता हूं क्योंकि वह मुझ से मुलाकात नहीं कर सकती।

पो० — सालिश, तुम तो बेवकूफ हो। तुम स्वयं क्यों खून में हाथ रंगो।

यह ठीक है कि तुम स्वयं दे नहीं सकते, किसी दूसरे आदमी को इस कुचक्र में सम्मिलित कर लो। मेरा अनुमान है, तुम्हारे हाथ में कोई ऐसा व्यक्ति अवश्य होगा।

सा० — (कुछ सोचकर) हां, एक है। और वह एक स्त्री है। उसका नाम जूडिथ है।

पो० — (हँसकर) जूडिथ, नाम तो प्यारा है। प्यारे साल्विश, यह ही एक नेक शगुन है। एक स्त्री है, खूब! बस मैं समझ गया। हमको भी केवल एक स्त्री की ही आवश्यकता थी। (शराब का प्याला भेंट करके) लो, अब तुम शराब पी सकते हो। शराब पीकर घर जाओ और विचार करो कि मैं कहां तक ठीक कहता हूं।

साल्विश शराब पीकर बाहर निकला, परन्तु उसके पैर लड़खड़ा रहे थे और दुर्गन्धमय धुंआ पूर्ववत् उसके दिमाग़ पर प्रभाव किये हुए था॥

इति १५वां परिच्छेद

१६वां परिच्छेद सोलहवां

(१६)

जूडिथ से अलग होकर ग्रेशिया ने चाल कुछ तेज़ कर दी। वह इस अपमान के स्थान से शीघ्र ही दूर जाना चाहती थी। ज्योंही वह ग्राल्परी के पास पहुंची तो देखा कि जैसप उसकी तलाश में एक लिफ़ाफ़ा लिये फिर रहा है।

जैसप — बेगम साहिबा! यह लिफ़ाफ़ा आपके नाम का डाक से आया है। मैं आपको तलाश करता फिरता था।

लिफ़ाफ़ा लेकर वह अपने निजी कमरे में आई। रास्ते में लिफ़ाफ़े का पता पढ़ा तो देखा कि वह लार्ड रैमूर के हाथ का लिखा हुआ है। दिल में विचार करती थी कि शायद लार्ड रैमूर अपने उपेक्षापूर्ण व्यवहार से स्वयं ही पछताया हो। शायद उसने मुझको बुला भेजा हो। धड़कते हुए और

कांपते हुए हाथों से उसने लिफाफा खोला और जो आशा वह बांध रही थी वह सब निराशा में बदल गई। पत्र में लिखा था—

"प्यारी ग्रेशिया (हाय शोक 'मेरी' का शब्द भी न था) मैंने अपने दिल से प्रश्न पूछा कि क्या मैं तुमको दोबारा लिखूं या न। ("दोबारा" शब्द पर ग्रेशिया चौंकी कि पहले उसने मुझको कब लिखा है। फिर ध्यान आया कि ओहो शादी से पहले उसने कुछ पुस्तकें मेरे पढ़ने के लिये भेजी थीं, शायद उसी खत से मतलब है) मैं यात्रा के उद्देश्य से बाहर जा रहा हूं और मेरा विचार है कि वर्त्तमान अवस्था में मेरी यात्रा को तुम भी पसंद करोगी। मैंने तुम्हारे लिये कुछ प्रबन्ध कर दिया है। वर्त्तमान चकित कर देने वाली घटनाओं में यह तो कठिन था कि जो कुछ मैं चाहता था, वही कर सकूं। मैंने तुम को सर्वथा अपनी इच्छानुसार काम करने के लिये स्वतंत्र कर दिया है। तुम सर्वथा स्वतंत्र हो। संभव है कि मुझे कुछ वर्ष बाहर रहना पड़े। इस लिये मैं तुम को अधिकार देता हूं कि जो कुछ मेरा है वह तुम्हारा है और तुम भले-बुरे की मालिक हो। पत्र लिखना तो मेरी धृष्टता है परन्तु मैं मजबूर हूं। मैंने ग्रीनिच में सब साजो सामान को वैसे ही छोड़ दिया है और मेरी अभिलाषा है कि वह इसी तरह से रहे जैसे मेरी उपस्थिति में था। क्योंकि यदि तुम्हारा इरादा किसी समय उधर रहने का हो तो तुम को कष्ट अनुभव न हो। इसके अतिरिक्त मैंने मौण्टकाम, जो स्काटलैंड में स्थित है, में भी, जिसका मैंने तुमसे वर्णन किया था, तार दे दिया है कि जिस समय लेडी रैमूर वहां आवें तो उन्हें कष्ट न हो। यदि तुम जाना चाहो तो तार दे देना और सेवक तुम्हें लेने के लिये स्टेशन पर आजावेंगे। मेरा विश्वास है कि तुमको

यह स्थान बहुत पसन्द आवेगा। और यदि श्रीमती के पिता जी भी तुम्हारे साथ जाना चाहें तो मुझ को निश्चय है कि वहां की जलवायु उन के बहुत अनुकूल पडेगी। यदि तुम्हारी इच्छा बाहर यात्रा की हो तो कस्बा "बर्नी" जो झील जेनेवा के निकट है चली जाना, वहां भी मेरा एक महल है। मैंने दारोगा के नाम वहां भी तार दे दिया है। वह भी तुम्हारे आने की प्रतीक्षा करेगा। लंदन में मैं ने पार्क लेन वाले मकान को साफ़ करा के सजा दिया है। तुम यदि लंदन रहना चाहो तो इस जगह रह जाना। मैंने "पबटन बैंक" में तुम्हारे नाम एक पर्याप्त धनराशि जमा करा दी है। बैंक वालों ने आप के पास चैकबुक भेज दी होगी। यदि यह राशि तुम को कम प्रतीत हो या खर्च हो जावे तो मि॰ हारवुड को लिख देना जितने की आवश्यकता होगी वह दे देगा। मैंने मि॰ हारवुड से भी कह दिया है।

मैं फिर कहूंगा कि ये सब प्रबंध करदेने पर भी मैं अपने आप में बहुत लज्जित हूं किन्तु केवल एक अभिलाषा मेरे सारे जीवन में है वह यह कि तुम को प्रसन्न रख सकूं। और यह अभिलाषा हो भी क्यों न? तुम भगवान की कृपा से अभी अल्पवयस्का हो और जीवन का सर्वोत्तम भाग तुम्हारे सामने है। तुम्हारे प्रसन्न और सरल व्यवहार से तुम्हारे बहुत मित्र बन जावेंगे। तुम फिरते २ और एक स्थान से दूसरे महल में रहते २ दिक् भी आजाओगी। संक्षेप यह कि मेरी चिन्ता मत करना, तुम स्वतंत्र हो। किन्तु नाममात्र के लिये जो शादी की गांठ हम दोनों में लगाई गई है उस का पालन अवश्य करना। मैं जानता हूं और मेरा हृदय साक्षी देता है कि तुम मुझको पत्र लिखना तो पसंद न करोगी। और यह स्वाभाविक बात है कि तुम को मेरा जितना कम ध्यान हो उतना ही अच्छा है। ईश्वर साक्षी है कि मैं तुम्हारे विचारों को अपवित्र करना नहीं चाहता। किन्तु फिर भी यदि कभी लिखने को मन कर आवे तो पत्र मुझे द्वारा "ओलम्पियन क्लब लंदन" के पते पर भेज देना। वह मुझ को जहां मैं हूंगा भेज देंगे।

८०१५

यदि जायदाद आदि के संबंधी किसी विषय में तुम को मेरी सम्मति लेनी हो या अपने किसी लाभ या आराम की आवश्यकता हो तो मि० हारवुड साहब के पास चली जाना। वह एक मित्र के सदृश या कानूनी सलाहकार के सदृश तुम को अच्छी सलाह देंगे और आज्ञा पालन कर देंगे। अधिक क्या लिखूं सिवाय इसके कि सदा प्रसन्न रहो॥"

रौल्फ रैमूर "

ज्यों २ ग्रेशिया पत्र पढ़ती जाती थी क्रोध से खून जोश मारता जाता था। वह कहती थी कि यह विचित्र पत्र है। जब रैमूर पत्र लिखने ही बैठा था तो अवश्य सोच कर बैठा होगा कि सिवाय सांसारिक बातों के अधिक कुछ नहीं लिखना है—प्यारी ग्रेशिया— यदि इस के साथ "मेरी" लिख देता तो क्या शान में फ़र्क आजाता। अन्त में लिखते हैं— रौल्फ रैमूर— "तुम्हारा" लिखते शर्म आई होगी। इस पत्र को पढ़कर ग्रेशिया की विचित्र अवस्था होगई। आखिर स्त्री थी। उसके अभिमान ने उसको अत्यन्त परेशान कर दिया। दिल से कहा, दूर ही रहना अच्छा है। प्रथम तो वे मुझ से भाग गये। फिर यह विचित्र रीति का लिखा। अस्तु० मैं तो अब विपत्तियों का सामना करूंगी ही। पत्र को लेकर वह सीधे अपने पिता के पास पहुंची जो कि पुस्तकालय में थे।

ग्रेशिया — पिताजी! लार्ड रैमूर ने यह पत्र भेजा है। (पत्र का विषय संक्षेप से सुना देती है) ज्यों २ ग्रेशिया पत्र पढ़ती जाती थी मि० टैम्पैस्ट ग्रेशिया में स्पष्ट परिवर्तन देख रहा था।

मि० टैम्पैस्ट — फिर तुम्हारी इच्छा क्या यहीं रहने की है।

ग्रेशिया — नहीं पिताजी। जो कुछ आपने प्रातःकाल कहा था मैं सोचती रही। मेरा विचार है आप सत्य पर हैं। निस्सन्देह प्राल्परी की मरम्मत होनी चाहिये। नया साजो सामान भी खरीदा जाये। नौकर भी और रख लिये जायें। जब तक यहां मरम्मत हो, हम कहीं बाहर चले जावें।

मि० टै० — (आश्चर्य से ग्रेशिया को देखकर) बेटी, प्रातःकाल तो तुमने मेरे विचारों के साथ सहमति नहीं दी।

ग्रे० — मैंने अपना विचार बदल दिया है। इसके अतिरिक्त मुझे प्रातःकाल यह पत्र भी तो नहीं मिला था।

टै० — जो कुछ रैमूर की इच्छा है वह ही करना चाहिये।

ग्रे० — रैमूर ने कोई इच्छा प्रकट नहीं की। केवल उसने प्रत्येक बात में मुझको स्वाधीन कर दिया है कि जो मैं चाहूं करूं।

टै० — फिर किस ओर चलने का विचार है?

ग्रे० — मौण्टक्लाम स्काटलैंड में।

टै० — बहुत अच्छा, कब का विचार है?

ग्रे० — जितनी शीघ्र संभव हो। मेरे विचार में एक दो दिन में चले चलें।

टै० — बेटी, जैसा तुम चाहोगी वही होगा। चलने से पूर्व हम मरम्मतों का काम भी शुरु करावेंगे।

"हां" कहकर ग्रेशिया कमरे से चली गयी और मि० टैम्पेस्ट अकेला बैठा सोचता रहा। वह ग्रेशिया का कुछ अन्दाजा न कर सका। प्रातःकाल तो वह बड़े जोश और उत्साह में मालूम होती थी और इस समय सर्वथा शान्त थी। मानों अत्यन्त समझदार और दूरदर्शिनी है। अब उसको सन्तोष हुआ। मेज़

के खाते में से कागज निकालकर लंदन के प्रसिद्ध कारखाने के नाम, जिसके हाथों से उसने ग्राल्टरी की मरम्मत करवानी चाही थी, पत्र लिख दिया। जिसके उत्तर में मि० फिशर जो कि सुप्रसिद्ध फर्म "गृह सुधार" का मैनेजर था, दूसरे दिन स्वयं उपस्थित होगया। ग्रेशिया ने तस्वीरें और सजावट के सामान के नमूने दिये। परन्तु मि० फिशर ने कहा कि यह सारे काम उस की इच्छा पर छोड़ दिये जावें।

टैम्पेस्ट — बेटी, मुझको मि० फिशर के विचार से सहमति है।

ग्रे० — बहुत अच्छा। इसी बातचीत के समय जैसप भृत्य अन्दर आया और कहने लगा —

जैसप — बेगम साहिबा! श्रीमती जी ने जो नौकरों के लिये विज्ञापन कल दिये थे, इस समय तक बहुत से प्रार्थनापत्र आचुके हैं। इसके अतिरिक्त एक जवान लड़की आपसे मिलने के अभिप्राय से बाहर उपस्थित है।

ग्रे० — वह कौन है?

जै० — हुजूर, अपना नाम वह जूडिथ बाउलर बताती है।

ग्रे० — तुम को मालूम है वह क्या चाहती है।

जै० — हुजूर उसने कुछ नहीं बतलाया। केवल इतना मात्र कहा है कि यदि आज बेगम साहिबा को अवकाश न हो तो मैं कल उपस्थित हो जाऊंगी। वह हुजूर से मिलना चाहती है।

ग्रे० — अच्छा, अन्दर भेजदो।

यह सुनकर नौकर बाहर गया और एक क्षण पीछे जूडिथ अन्दर प्रविष्ट हुई। ग्रेशिया उसको देखकर भौचक्की सी रह गई। क्योंकि जूडिथ ने सब ची

केंचली बदली हुई थी। जब जंगल में ग्रेशिया ने उसको पहले पहल देखा था वह निस्सन्देह चौकीदार की लड़की मालूम होती थी जो काम काज में लगी रहती है और उसने वैसे ही कपड़े भी पहने हुए थे। परन्तु इस समय वह एक अमीर लेडी की सेविका मालूम होती थी। खाकी मरीने की आला दर्जे की पोशाक पहने हुए थी और जो उस पर ऐसी अनुकूल बैठी थी कि सिर से पैर तक सारी पोशाक ऐसी सजती थी मानों वह सदा से पहनती चली आई है। शिष्टाचार की रीति में भी अन्तर पड़ गया था। परन्तु इस समय उसका रंग पीला था। दृष्टि नीचे झुकी हुई थी। बालों को अत्यन्त सुन्दरता से संवारा हुआ था। उसके मिजाज में अत्यन्त दीनता और करुणा प्रतीत होती थी। शायद यह चेहरे की पीलापन भय के मारे हो।

ग्रेशिया- तुम मुझ से मिलना चाहती हो?

जूडिथ — ~~जी हुजूर! बे~~ (अत्यन्त दीनता से) जी हुजूर। बेगम साहिबा।

ग्रे० — बैठ जाओ। किस काम के लिये तुम आई हो?

जू० —(कुर्सी पर बैठकर) मैंने सुना था कि हुजूर को एक निजू सेविका की आवश्यकता है इसी लिये मैं निवेदन पत्र भेजने की जगह स्वयं ही उपस्थित हो गई हूं।

ग्रेशिया को उसके वार्तालाप के ढंग से ऐसा मालूम होता था जैसे किसी की सिखाई पढ़ाई हुई आई है। परन्तु ग्रेशिया ने इस का उत्तर स्वयं ही अपने मन में इस प्रकार से दे लिया कि वह सोचती हुई आई है कि किस रीति से बातचीत करनी चाहिये। ग्रेशिया को इस लड़की की छवि बहुत भाई और वह सोचने लगी ... मालूम होता है कि भय से डर रही

है।

ग्रे० — क्या तुमने यह सेवा पहले भी कभी की है?

जू० — नहीं हुजूर। लेकिन मेरी संबंधी बहन एक बेगम साहिबा की सेवा में इसी काम पर है और मैंने कुछ उससे सीख लिया है। उसने मुझे बाल संवारना, और इसी प्रकार के और सिंगार आदि करना सिखलाया है। और मेरा विचार है कि मैं श्रीमती को प्रसन्न कर लूंगी।

ग्रे० — इस विषय में मुझे भरोसा है। पर मेरे पास बहुत आवेदन पत्र आचुके हैं।

जू० — नि:सन्देह वे सब अत्यन्त अनुभवी होंगी। (नम्रता से) लेकिन बेगम साहिबा! धृष्टता क्षमा करें। इन सबसे हुजूर परिचित नहीं हैं और इसी कारण से मुझको आशा है कि हुजूर उनकी अपेक्षा मुझको प्रथम अवसर देंगी। असल पूछें तो मैं तो हुजूर की पुरानी सेविका हूं। मेरा पिता हुजूर के महल ग्रीनिच की भूमि का रक्षक शिकार है। बेगम साहिबा! पता करलें कि उसके या मेरे विरुद्ध कोई शिकायत है या नहीं।

ग्रे० — (अत्यन्त प्यार से) मुझको इस बात का विश्वास है।

जू० — मुझको हुजूर कुछ काल आजमायें। इस काल में मैं हुजूर की तबीयत से परिचित भी हो जाऊंगी।

ग्रे० — कुछ तुमको अधिक काम भी नहीं करना पड़ेगा। क्योंकि मैं पहले बिना सेविका के ही रहती थी। हां, तुमको यह भी बतला देती हूं कि मैं स्काटलैंड जा रही हूं।

जू० — हुजूर तो क्या चिन्ता है। इस बहाने से मैं भी जलवायु परिवर्तन कर लूंगी।

ग्रे० — अच्छी बात है। परन्तु तुम इस समय परीक्षा के लिये रखती हूं। यदि तुम से यह सेवा न हुई तो तुम न करना। अच्छा बताओ, तुम कब आओगी?

जू० — जब सरकार हुक्म दें। बेगम साहिबा! मुझको पूर्ण आशा थी कि हुजूर मुझको अवश्य सेवा में रख लेंगी और इसी कारण मैंने वस्त्र आदि नये बनवा लिये थे जिससे कि यदि हुजूर को तुरन्त चलना पड़े तो तय्यार रहूं।

ग्रे० — तुम बड़ी दूरदर्शिनी हो। अच्छा परसों तुम आजाना।

जू० — (आदर के लिये झुककर) हुजूर की मैं बहुत कृतज्ञ हूं॥ यह कहकर जूडिथ प्रणाम करके चली गई। जब बाहर चली गई तो जान में जान आई। ईश्वर का धन्यवाद दिया कि इस परीक्षा में तो पूरी उतरी॥

इति १८ वां परिच्छेद समाप्त॥

अथ १९ वां परिच्छेद

ग्रेशिया आज सायंकाल के झुटपुटे समय में मौण्टकाम स्काटलैंड में स्थित मौण्टकाम में पहुंच गई। मार्ग की यात्रा अत्यन्त सुख से कटी। यद्यपि यात्रा और नर्क को एक सदृश कहा गया है पर धनवानों को क्या पर्वाह। रिज़र्व गाडी लगी हुई थी। कोई तीसरे दर्जे के यात्रियों को पूछे तो दुःख का पता लगे। ग्रेशिया को इस ठाठ से यात्रा करने का यह प्रथम ही अवसर था। उसके साथ मिस्टर टैम्पेस्ट और जूडिथ थे। मेसर्ज हिस्टर को पीछे छोड़ आये थे कि वे प्राल्टरी की देखभाल रखें। ग्रेशिया अपने साथ कोई और नौकर लेकर न आई थी, क्योंकि मौंटकाम वाले महल में असंख्य नौकर पहले ही विद्यमान थे। जूडिथ अपने काम में प्रवीण निकली। वह चुपचाप सब काम कर देती थी। वह समय में कभी बोलती नहीं थी। जिस समय लेडी रमूर कोई प्रश्न करती उस

समय उसका उचित और उतना ही उत्तर देती जो नपा तुना हो। दबे पाँव धीमे चलती जिससे ग्रेशिया चौकन्नी हो जाती और सोचती कि नौकरानी के रूप में मेरे हाथ में एक खजाना लग गया है। वह जूडिथ को मित्र बनाना चाहती थी परन्तु जूडिथ कुछ खिंची २ रहती थी। और यद्यपि प्रत्येक काम को वह अत्यन्त सावधानता से करती, परन्तु ग्रेशिया को अधिक वार्तालाप करने और परिचय बढ़ाने का अवसर न देती।

ज्योंही ग्रेशिया मौण्टकाम के छोटे से स्टेशन पर पहुंची तो देखा कि पहाड़ों ने हरे रंग की चादर ओढ़ी हुई है और सूर्य और आकाश ने विचित्र दृश्य पहाड़ों पर उत्पन्न किया हुआ है। पहाड़ी के नीचे एक छोटी सी सुन्दर झील तपे हुए आवे की तरह लाल २ दिखाई दे रही है जिस के किनारों पर कई एक झोंपड़ियां भी पड़ी हुई हैं। श्वेत रंग की एक नौका भी झील में पड़ी हुई है मानों पानी पर श्वेत बत्तख तैर रही है। झील के परे और पहाड़ी के बीच वृक्षों से घिरे हुए जंगल में एक महल के लाल पत्थर के कलश दिखाई पड़ रहे हैं। रेल से उतरते ही कुछ नौकर पहाड़ी वेष पहने हुए आगे बढ़े। (यह वेष घाघरा पल्टन जैसी होती है या जैसे मदारी लोग नाचने वाली बंदरिया को पहनाते हैं, वैसा होता है।) और उन्होंने सवारियों को गाड़ियों में बिठाकर असबाब को हाथों हाथ उतरवा लिया। गाड़ी चल पड़ी। ग्रेशिया गाड़ी में बैठी हुई अपने चारों ओर के दृश्य से खूब प्रसन्न हो रही थी। कभी घोड़े उतराई पर तेज़ चलने लगते थे, कहीं चढ़ाई पर कदम २ हो जाते थे। सड़क के दोनों ओर छायादार पेड़ पंक्ति बांधे खड़े थे। रास्ता लंबा था। समाप्त हो जाने के बाद गाड़ी पत्थरों के एक महराबदार फाटक में से गुज़री जिस के बराबर एक पुरानी (७ ६८) चारदीवारी की इमारत थी। यहां से आगे बढ़कर

फिर इस कदर गुंजान पेड़ सड़क पर आगये मानों हरे पत्तों की छत के नीचे से गाड़ी चल रही थी। इस जगह अब रास्ता सांप की तरह चक्करदार था। अन्त में इस रास्ते को पार कर और चरागाहों और हरे मैदानों के बीच से गुजर कर गाड़ी एक अति विशाल और रमणीय इमारत के सामने जा खड़ी हुई। जिस के चारों ओर छायादार पेड़ लगे हुए थे। गाड़ी के ठहरते ही महल का द्वार खुला और कुछ ~~सेवक~~ भृत्य अपनी पहाड़ी पोशाक में सीढ़ियों से उतर कर नीचे आये और पंक्तिबद्ध खड़े होगये, मानों कि किसी बड़े फौजी जनरैल की सलामी उतारने वाले हैं। उनमें से सबसे बूढ़ा जो शेष भृत्यों से बुद्धिमान और अच्छी पोशाक पहने था आगे बढ़ा और गाड़ी का द्वार खोलकर कहने लगा।

बूढ़ा भृत्य — हुजूर को मौण्टकाम पधारना शुभ हो। मेरा नाम ग्रेहम है और मैं हुजूर के मौण्टकाम स्थित सारे प्रदेश का दारोगा हूं। यह कहकर वह ग्रेशिया के साथ महल में गया। ग्रेशिया को ऐसा मालूम होता था जैसे बादशाही शान का राजप्रासाद ~~जुलूस~~ होता है। यह महल प्राल्टरी से भी अधिक सुन्दर था। स्वर्गवासी लार्ड रैमूर (रौल्फ के पिता) ने इसको स्काटलैंड के निर्धन ड्यूक (सर्दार) से खरीद लिया था।

७४) देवदारु की ~~[illegible]~~ जोड़ियां लगी हुई थीं और बारहसिंहे के सींग और स्काटलैंड के पुराने हथियार दीवारों पर टंगे हुए थे। फ़र्श पर हिरण की खालें बिछी हुई थीं। यद्यपि अगस्त का महीना था परन्तु इस प्रदेश में रात को शीत अधिक पड़ता है। इसी कारण से एक बड़े अग्निकुण्ड में अग्नि सुलग रही थी। सागौन की लकड़ी की सीढ़ियां इस कमरे से ऊपर को गयी थीं जिन के आगे ऊपर चढ़कर ~~अ~~ विस्तृत और अगनित शयन कक्ष थे। वह इमारत इतनी अधिक पुरानी थी कि प्राल्टरी भी इन के सामने

नवीन मालूम होती थीं। ग्रेशिया ऐसी सुविशाल महल को देखकर कुछ घबरा गई। उस को विश्वास ही न आता था कि मैं इस सुविशाल महल और इन विशालकाय मनुष्यों की, जो मेरे छोटे से इशारे पर आज्ञा मान कर काम करने को उद्यत हैं- स्वामिनी हूं। अग्नि के पास एक मेज़ पर पिर्च प्यालियां और सोने चांदी के चमचे रखे हुए थे।

ग्रेहम— बेगम साहिबा! मैं ने हुक्म दे दिया है कि एक घंटे में खाना तैयार हो जावेगा। परन्तु मेरा ख्याल है कि हुज़ूर एक प्याला चाय पान करेंगी।

ग्रेशिया -(कुर्सी पर बैठ कर) बड़ी कृपा होगी।

जितने समय ग्रेशिया चाय पीती रही मिस्टर टैम्पैस्ट और मि० ग्रेहम आपस में वार्तालाप करते रहे।

मि० ग्रेहम — (मि० टैम्पैस्ट के प्रश्न के उत्तर में) जी नहीं महोदय! वर्तमान लार्ड साहब केवल बाल्यकाल में अपने पिता के साथ आये थे। उसके बाद से वे आज तक नहीं आये। इरादे तो साहब बहादुर ने कई बार किये परन्तु कोई न कोई बाधा उपस्थित होती रही। इसलिये आ नहीं सके।

टै० — (आश्चर्य से) और यह स्थान ऐसी स्वच्छ अवस्था में सदा रहता है?

ग्रे० — जी श्रीमान्, ऐसी ही। भगवान जाने वे किस समय आजावें।

टै० — इस से तुम को कष्ट तो अवश्य होता होगा?

ग्रे० — जी नहीं। स्थान साफ़ सुथरा रखना ही अच्छा होता है। यदि चार दिन आप बंद कर दें तो सारी इमारत खराब हो जाने का डर रहता है। मुझको आशा है कि आप को या बेगम साहिबा को कोई कष्ट न होगा। यदि कुछ परिवर्तन कराना है तो मुझको आज्ञा दें तुरन्त करा दिया जावेगा।

लाट साहब ने मुझको चिट्ठी में आग्रहपूर्वक लिखा है कि मैं बेगमसाहिबा की प्रसन्नता को आवश्यक समझूं। आशा है कि भृत्यों को भी आप समझदार और होशियार पायेंगे।

यह कह कर मि० ग्रेहम झुककर प्रणाम करके चला गया। इस के जाने के कुछ क्षण बाद, जूडिथ अटारी से नीचे उतरी और कहने लगी कि सामान यथाविधि लगवा दिया गया है और कुछ सन्दूक खोल दिये गये हैं।

ग्रेशिया चाय पीने के बाद ऊपर गई तो कुछ कमरों को अत्यन्त सुन्दरता से सजा हुआ पाया जो उस के लिये निश्चित किये गये थे और निस्सन्देह एक राजकुमारी के योग्य थे। एक विशाल शयनकक्ष में अंगीठी से खूब गर्माई पहुंचाई गई थी। और बैठक का कमरा सोने के कमरे से कुछ छोटा था परन्तु अत्युत्तम और बहुमूल्य पदार्थों से सजा हुआ था। एक ओर को एक नया पियानो बाजा रखा हुआ था। और किताबों की अलमारी में सुनहरी जिल्द वाली अतिसुन्दर सदाचार विषयक किताबें लगी हुई थीं। सार यह कि प्रत्येक वस्तु ऐसी थी जो नवयुवती श्रीमतियों की इच्छानुकूल हो। दीवानखाने की खिड़कियों से झील और जंगल का दृश्य खूब दिखाई देता था।

ग्रेशिया—(जूडिथ से) कैसी अच्छी जगह है।

जूडिथ— बेगमसाहिबा, वास्तव में बहुत ही रमणीक स्थान है। कहिये वस्त्रादि कब पहनेंगी?

ग्रे०—थोड़ी देर में। कोई १५ मिनिट बाद मेरे पास आ जाना।

जूडिथ के जाने के बाद ग्रेशिया फिर प्राकृत दृश्यों को देखने में लीन हो गई। यद्यपि महल बहुत बड़ा था और जिस भूमिखण्ड पर बनाया गया

था वह अति उपयुक्त जगह थी। इस स्थान पर ग्रेशिया को एकान्त सताने लगा। इस घर का स्वामी कहां होगा, इस प्रश्न के उत्तर में वह रैमूर का ध्यान भुलाने का बहुत यत्न करती थी परन्तु उसके चारों ओर रैमूर की मूर्ति ही फिरती दिखाई देती थी। और वृक्षों की सनसनाहट में जो वृक्षों में हवा के चलने से उत्पन्न हुई थी, ऐसा प्रतीत होता था कि रैमूर बोल रहा है।

शीघ्र ही ग्रेशिया ने वेष परिवर्तन किया और खाने के कमरे में जो नीचे की मंजिल में था चली गई। खाने का कमरा भी निमंत्रण का कमरा कमरे की प्रतीत होता था। वर्तमान युग की कोई सजावट इसमें नहीं थी। चौखटें अत्यन्त काले सागौन की थीं। केवल एक तस्वीर जो मनुष्य की लंबाई के बराबर थी, कमरे में लगी हुई थी, और किसी पुराने ड्यूक की थी जो कि किसी समय में इस महल का मालिक होगा। कमरे में स्थान २ पर शमादान थे जिन में मोमबत्तियां रोशन थीं। सिवाय टेलर के शेष सभी भृत्य अपने जातीय वेष में भूषित थे। उन्होंने लंबी २ दाढ़ियां रखी हुई थीं और अपनी स्वामिनी को बड़ी मान प्रतिष्ठा से देख रहे थे जैसे कि स्वामिभक्त कुत्ता अपने मालिक को देखता है। ज्यूंही कि खाना मेज़ पर चुना गया सब के मुंह से एक आनन्द की ध्वनि निकली जो कि शोर में ग्रेशिया न सुन सकी। [redacted] ग्रेशिया ने अभिप्राय जानने की दृष्टि से अपने पिता की ओर देखा और यह सुनकर, कि खाने से पहले ये लोग अपने देश की प्रथा के अनुसार ऐसा शोर करते हैं, चुप हो गई। खाना खाने के बाद दोनों बाप बेटी गोल कमरे में चले गये।

(आगे देखो न० २ कापी)

गोलकमरेमें चलेगये। स्थानकेके मरेसे यह अधिक प्रकाशम-
य था

TIME TABLE

Period	Monday	Tuesday	Wednesday	Thursday	Friday	Saturday
1						
2						
3						
4						
5						
6						
7						

Ashfaq Printing Press Carkaman Hyd-A.P.